PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 020
दि. 20.05.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

आवारा कुत्तों पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला, कहा- इंसानी सुरक्षा से बड़ा कोई अधिकार नहीं

नई दिल्ली। देशभर में लगातार बढ़ रहे आवारा कुत्तों के हमलों, रेबीज के खतरे और सार्वजनिक सुरक्षा को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने बेहद सख्त और ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। शीर्ष अदालत ने साफ शब्दों में कहा है कि मानव जीवन और नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है और राज्य सरकारें अब इस गंभीर समस्या से आंख नहीं मूंद सकतीं। अदालत ने आवारा कुत्तों की नसबंदी, पुनर्वास और उन्हें दूसरी जगह स्थानांतरित करने से जुड़े 7 नवंबर 2025 के अपने आदेश में बदलाव या उसे वापस लेने की मांग करने वाली सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया। इसके साथ ही अदालत ने भारतीय पशु कल्याण बोर्ड द्वारा जारी मानक संचालन प्रक्रियाओं को भी वैध ठहराया और उनके खिलाफ दाखिल सभी चुनौतियों को अस्वीकार कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला ऐसे समय आया है जब देश के कई हिस्सों से आवारा कुत्तों के हमलों की भयावह घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। बच्चों, बुजुर्गों और राहगीरों पर कुत्तों के हमले आम होते जा रहे हैं। कई मामलों में लोगों की जान तक चली गई, जबकि हजारों लोग हर साल रेबीज संक्रमण का शिकार हो रहे हैं। अदालत ने इन्हीं घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि वह देशभर से आने वाली इन खबरों से आंख नहीं फेर सकती। अदालत ने टिप्पणी की कि आज स्थिति यह हो गई है कि आम नागरिक सार्वजनिक स्थानों पर खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं और विदेशी पर्यटक तक हमलों का शिकार बन रहे हैं।

जस्टिस Vikram Nath, Sandeep Mehta और N. V. Anjaria की बेंच ने इस संवेदनशील मामले में लंबी सुनवाई के बाद यह फैसला सुनाया। अदालत ने माना कि वर्षों से राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की ओर से आवारा कुत्तों की बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए गए। अदालत ने कहा कि केवल योजनाएं और दिशा-निर्देश बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से उन्हें लागू करना भी जरूरी है।

अपने आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि हर जिले में कम से कम एक पूरी तरह से कार्यशील एनिमल बर्थ कंट्रोल यानी एबीसी सेंटर स्थापित किया जाए। अदालत ने कहा कि इन केंद्रों में आधुनिक सर्जिकल सुविधाएं, प्रशिक्षित स्टाफ, पर्याप्त इंफ्रास्ट्रक्चर और जरूरी लॉजिस्टिक्स उपलब्ध होने चाहिए। अदालत ने स्पष्ट किया कि इन निर्देशों को केवल औपचारिकता की तरह नहीं, बल्कि पूरी गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ लागू किया जाए।

सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान रेबीज के खतरे को भी गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बताया। अदालत ने कहा कि देश में हर साल हजारों लोग कुत्तों के काटने के मामलों का सामना करते हैं और कई बार समय पर इलाज न मिलने के कारण स्थिति जानलेवा हो जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए अदालत ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आदेश दिया कि सभी सरकारी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में एंटी-रेबीज वैक्सीन और इम्यूनोग्लोबुलिन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराए जाएं। अदालत ने राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर आवारा पशुओं की मौजूदगी को भी गंभीर खतरा बताते हुए इस दिशा में विशेष कदम उठाने के निर्देश दिए।

फैसले का सबसे चर्चित हिस्सा वह रहा, जिसमें अदालत ने लाइलाज रूप से बीमार, रेबीज से संक्रमित या अत्यधिक आक्रामक और खतरनाक कुत्तों को मारने की अनुमति से जुड़ी टिप्पणी की। अदालत ने कहा कि ऐसे मामलों में जहां किसी कुत्ते से मानव जीवन और सार्वजनिक सुरक्षा को स्पष्ट खतरा हो, वहां पशु जन्म नियंत्रण नियमों और अन्य कानूनी प्रोटोकॉल के तहत उन्हें समाप्त करने पर विचार किया जा सकता है। अदालत ने यह स्पष्ट किया कि यह फैसला किसी क्रूरता को बढ़ावा देने के लिए नहीं, बल्कि मानव जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए है।

सुनवाई के दौरान अदालत ने यह भी माना कि कई बार स्थानीय प्रशासन और नगर निकाय कार्रवाई करने से इसलिए बचते हैं क्योंकि उन्हें कानूनी विवाद या एफआईआर का डर रहता है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि अदालत के निर्देशों का पालन करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कोई एफआईआर या आपराधिक कार्रवाई नहीं की जाएगी, यदि उन्होंने अपनी जिम्मेदारियां ईमानदारी और सद्भावना के साथ निभाई हों। अदालत ने कहा कि कानून लागू करने वाले अधिकारियों को सुरक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे बिना दबाव के अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।

सुप्रीम कोर्ट ने देश के सभी हाई कोर्ट्स को भी निर्देश दिया कि वे इस पूरे मामले में स्वतः संज्ञान लें और अपने-अपने राज्यों में इन आदेशों के पालन की निगरानी करें। अदालत ने कहा कि हाई कोर्ट्स स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अतिरिक्त दिशा-निर्देश जारी कर सकते हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की मूल भावना को कमजोर नहीं किया जाना चाहिए। अदालत ने यह भी कहा कि जो अधिकारी आदेशों के पालन में लापरवाही बरतेंगे या जानबूझकर उन्हें नजरअंदाज करेंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

इस फैसले के बाद देशभर में पशु अधिकार संगठनों और आम नागरिकों के बीच बहस तेज हो गई है। कई डॉग लवर्स और एनजीओ लंबे समय से यह मांग कर रहे थे कि आवारा कुत्तों को मारने के बजाय नसबंदी और पुनर्वास के जरिए समस्या का समाधान निकाला जाए। वहीं दूसरी ओर आम नागरिकों का एक बड़ा वर्ग लगातार बढ़ते हमलों और सार्वजनिक असुरक्षा को लेकर सख्त कार्रवाई की मांग कर रहा था। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट कर दिया कि संवेदनशीलता जरूरी है, लेकिन वह मानव जीवन की कीमत पर नहीं हो सकती।

विशेषज्ञों का मानना है कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला देश में आवारा कुत्तों को लेकर प्रशासनिक नीतियों और नगर निकायों की कार्यप्रणाली में बड़ा बदलाव ला सकता है। अब राज्यों पर दबाव होगा कि वे केवल कागजी योजनाओं तक सीमित न रहें, बल्कि वास्तविक और प्रभावी कदम उठाएं। माना जा रहा है कि आने वाले समय में इस फैसले का असर देशभर की शहरी और ग्रामीण व्यवस्थाओं पर दिखाई देगा।

फिलहाल सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। एक ओर इसे आम लोगों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम बताया जा रहा है, तो दूसरी ओर पशु अधिकार समूह इसे लेकर चिंता जता रहे हैं। लेकिन अदालत ने अपने फैसले में स्पष्ट संकेत दिया है कि जब बात मानव जीवन और सार्वजनिक सुरक्षा की हो, तो सरकारों और प्रशासन को निर्णायक कदम उठाने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

गोरखपुर स्टेशन पर ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित,गोरखपुर स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज के नींव कार्य हेतु ब्लॉक

पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर स्टेशन पर प्लेटफॉर्म क्रमांक 7 एवं 8 पर एफओबी-ए के नींव कार्य हेतु ट्रैफिक एवं पावर ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें निरस्त , शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट तथा विस्तारित की जाएंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

निरस्त होने वाली ट्रेनें

1. 30 मई, 2026 एवं 06 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 05054 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर साप्ताहिक स्पेशल निरस्त रहेगी।
2. 29 मई, 2026 एवं 05 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 05053 गोरखपुर – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल निरस्त रहेगी।

शॉर्ट टर्मिनेट / शॉर्ट ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें

1. 01 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19091 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर हमसफ़र एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा गोरखपुर कैंट और गोरखपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
2. 02 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19092 गोरखपुर – बांद्रा टर्मिनस हमसफ़र एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन से 21:40 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गोरखपुर और गोरखपुर कैंट के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
3. 31 मई, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22921 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर अंत्योदय बलरामपुर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा बलरामपुर और गोरखपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
4. 02 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22922 गोरखपुर – बांद्रा टर्मिनस अंत्योदय बलरामपुर स्टेशन से 06:08 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गोरखपुर और बलरामपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
5. 29 मई, 2026 से 07 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19489 अहमदाबाद – गोरखपुर एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा गोरखपुर कैंट और गोरखपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
6. 30 मई, 2026 से 08 जून, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19490 गोरखपुर – अहमदाबाद एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन से 21:40 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा गोरखपुर और गोरखपुर कैंट के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

विस्तारित होने वाली ट्रेनें

1. 28 मई, 2026 से 06 जून, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19409 साबरमती – गोरखपुर एक्सप्रेस छपरा तक विस्तारित की जाएगी। यह ट्रेन छपरा स्टेशन पर 21:25 बजे पहुंचेगी। यह ट्रेन गोरखपुर के बाद देवरिया सदर एवं सिवान स्टेशनों पर भी ठहरेगी।
2. 30 मई, 2026 से 08 जून, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19410 गोरखपुर – साबरमती एक्सप्रेस गोरखपुर के बजाय छपरा स्टेशन से प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन छपरा स्टेशन से 01:00 बजे प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन गोरखपुर से पहले सिवान एवं देवरिया सदर स्टेशनों पर भी ठहरेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखें। ठहराव एवं समय संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

वरतेज रेलवे स्टेशन पर डीजल चोरी के मामले में 4 आरोपी दोषी करार, रेलवे न्यायालय ने लगाया 40,000 का जुर्माना

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के अंतर्गत वरतेज रेलवे स्टेशन पर रेलवे के डीजल इंजन से 150 लीटर डीजल चोरी किए जाने के मामले में रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), भावनगर द्वारा की गई त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई के फलस्वरूप चार आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां माननीय रेलवे न्यायालय, भावनगर ने सभी आरोपियों को दोषी ठहराते हुए कुल 40,000/- का जुर्माना लगाया।

उल्लेखनीय है कि दिनांक 14 जून 2025 को वरतेज रेलवे स्टेशन पर खड़े रेलवे डीजल इंजन से लगभग 150 लीटर डीजल चोरी होने की घटना सामने आई थी। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए आरपीएफ भावनगर के निरीक्षक श्री कपिलकुमार चौहान के मार्गदर्शन में एक विशेष टीम का गठन किया गया।

गठित टीम में उप निरीक्षक श्री अश्विन वरु, सहायक उप निरीक्षक श्री रामप्रताप, कांस्टेबल श्री धर्मेश डांगर, कांस्टेबल श्री फैजल पठान तथा अपराध शाखा के श्री जगदीश डांगर शामिल थे। टीम द्वारा लगातार दिन-रात किए गए गहन प्रयासों, तकनीकी जांच तथा सूचनाओं के आधार पर दिनांक 10 जुलाई 2025 को चार आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी किए गए 150 लीटर डीजल की बरामदगी की गई।

गिरफ्तार आरोपियों के विरुद्ध रेलवे संपत्ति (अवैध कब्जा) अधिनियम, 1966 [Railway Property (Unlawful Possession) Act] की धारा 3 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया तथा उन्हें माननीय रेलवे न्यायालय, भावनगर में प्रस्तुत किया गया।

माननीय रेलवे न्यायालय, भावनगर के न्यायाधीश श्री वाई. पी. शाह ने मामले की त्वरित सुनवाई करते हुए चारों आरोपियों को दोषी ठहराया और उन पर कुल 40,000/- का आर्थिक दंड अधिरोपित किया।

डीजल चोरी को एक गंभीर आर्थिक अपराध माना जाता है। इस प्रकार के अपराध न केवल सरकारी संपत्ति को क्षति पहुंचाते हैं, बल्कि राष्ट्रीय संसाधनों की हानि, आपूर्ति व्यवस्था में बाधा तथा सार्वजनिक राजस्व पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। रेलवे प्रशासन ऐसे अपराधों के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाते हुए दोषियों के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित कर रहा है।

पश्चिम रेलवे यात्रियों एवं आम नागरिकों से अपील करता है कि रेलवे संपत्ति की सुरक्षा में सहयोग करें तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तत्काल रेलवे सुरक्षा बल अथवा रेलवे प्रशासन को दें।

वडोदरा स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित,छायापुरी बाजवा, विश्वामित्री स्टेशन से होगी शार्ट टर्मिनेट/ शार्ट ओरिजनेट

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल में वडोदरा स्टेशन पर ब्लॉक के अंतर्गत वडोदरा स्टेशन यार्ड में यार्ड रीमॉडलिंग के साथ इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली के कमीशनिंग कार्य हेतु TWO व नॉन इंटरलॉकिंग (NI) कार्य किया जा रहा है जिसकी शुरूआत दिनांक 16.05.26 से की गई थी। जिसके अंतर्गत कार्य हेतु ट्रैफिक एवं पावर ब्लॉक लिया जा रहा है। यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षित रेल संचालन सुनिश्चित करने हेतु कुछ ट्रेनों का टर्मिनेशन एवं ओरिजिनेशन अस्थायी रूप से विश्वामित्री , बाजवा , छायापुरी एवं मकरपुरा स्टेशनों पर किया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस कार्य के अंतर्गत वडोदरा स्टेशन पर दिनांक 21 मई, 2026 से 20 जून, 2026 तक ट्रैफिक एवं पावर ब्लॉक लिया जाएगा जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित होगी।

इस महत्वपूर्ण अधोसंरचना कार्य के कारण कुछ ट्रेनों का शॉर्ट टर्मिनेशन/शॉर्ट ओरिजिनेशन किया जाएगा।

प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :

शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन ट्रेनें :-

- ट्रेन संख्या 69233 वडोदरा–दाहोद मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–छायापुरी के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69117 वडोदरा–दाहोद मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–छायापुरी के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69119 वडोदरा–दाहोद मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–छायापुरी के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69121 वडोदरा–गोधरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–छायापुरी के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69101 वडोदरा–वटवा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–बाजवा के बीच निरस्त रहेगी।
- * ट्रेन संख्या 69115 वडोदरा–वटवा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–बाजवा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69113 वडोदरा–वटवा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–बाजवा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69107 वडोदरा–वटवा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा–बाजवा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69109 सूरत–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक विश्वामित्री स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा विश्वामित्री–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69111 सूरत–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक विश्वामित्री स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा विश्वामित्री–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69122 गोधरा–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा छायापुरी–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69120 दाहोद–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा छायापुरी–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- * ट्रेन संख्या 69118 गोधरा–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा छायापुरी–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69234 दाहोद–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा छायापुरी–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69114 वटवा–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा बाजवा–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69108 वटवा–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा बाजवा–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 69102 वटवा–वडोदरा मेमू दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा बाजवा–वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 12930 वडोदरा–वलसाड इंटरसिटी सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शाम 16:45 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा स्टेशन पर 17:05/17:10 तक 5 मिनट स्टॉपेज होगा।
- ट्रेन संख्या 59049 वलसाड–वडोदरा पैसेंजर ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक मकरपुरा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा मकरपुरा-वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 59050 वडोदरा–वलसाड पैसेंजर ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक मकरपुरा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजनेट की जाएगी तथा वडोदरा-मकरपुरा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 59549 वडोदरा–वटवा पैसेंजर ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक प्रतापनगर स्टेशन से सुबह 5:40 बजे शॉर्ट ओरिजनेट की जाएगी तथा वडोदरा स्टेशन पर 06:25/06:30 तक 5 मिनट का ठहराव होगा।
- ट्रेन संख्या 22959 वडोदरा–जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी तथा वडोदरा-बाजवा के बीच निरस्त रहेगी।
- ट्रेन संख्या 22960 जामनगर–वडोदरा पैसेंजर ट्रेन दिनांक 21 मई, 2026 से दिनांक 20 जून, 2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी तथा बाजवा-वडोदरा के बीच निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे यात्रा से पूर्व ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य अद्यतन जानकारी के लिए रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

संपादकीय

मुनाफे का जानलेवा खेल

इंसानी जीवन मूल्यों में किस हद तक गिरावट आई है कि कुछ लालची लोग मुनाफे के लिये दूसरे लोगों के जीवन से खिलवाड़ करने से भी गुरेज नहीं करते। अब चाहे सुकोमल व बीमारियों के संक्रमण की दृष्टि से संवेदनशील छोटे बच्चे ही क्यों न हों। निस्संदेह, जीवनदायिनी दूध में मिलावट, इंजेक्शन लगे फल-सब्जी तथा नकली दवाइयों का कारोबार जैसे घातक कृत्य से मुनाफा कमाने में लगे लोगों की मानवीय संवेदनाएं मर चुकी हैं। कल्पना करें कोई बीमार व्यक्ति सेहत के लिये दूध का सेवन करे और उसे रासायनिक पदार्थों से मिला दूध मिले तो वह स्वस्थ होने के बजाय बीमार ही हो जाएगा। ऐसा ही नकली-मिलावटी दवाइयों के बाबत कहा जा सकता है कि कोई बीमारियों से मुक्त होने हेतु दवा खरीदे और उसे नकली दवाइयां बेच दी जाएं। लेकिन इससे भी घातक वह कुकृत्य है जिसमें पंजाब में बायोमेडिकल कचरे की अवैध रीसाइक्लिंग से जुड़े रैकेट का भंडाफोड़ हुआ है। दुखद ही है कि अस्पतालों और ब्लड बैंकों से एकत्र खतरनाक बायोमेडिकल कचरे को निर्धारित नियमों को ताक में रखकर रीसाइक्लिंग के लिये भेजा जा रहा था। जबकि सख्त नियमों के अंतर्गत प्रावधान है कि बायोमेडिकल कचरे को अनिवार्य रूप से नष्ट किया जाना चाहिए। खबरें तो ऐसी भी आई हैं कि बायोमेडिकल कचरे से रिसाइकल किया गया प्लास्टिक, मेडिकल उपकरण, यहां तक कि सस्ते खिलौने बनाने वालों तक पहुंच रहा है। उल्लेखनीय है कि बायोमेडिकल कचरे को उच्च गुणवत्ता वाले प्लास्टिक के रूप में पाया जाता है, जो सस्ती उपलब्धता के कारण उत्पादकों की लागत कम कर देता है। वहीं कुछ उत्पादों को साफ करके फिर से बाजार में उतारने की भी आशंका है। दरअसल,जानलेवा अवैध कारोबार का खुलासा तब हुआ, जब पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को मिली शिकायत के आधार पर पुलिस ने एक गोदाम से भारी मात्रा में बायोमेडिकल कचरा बरामद किया। निश्चित ही, इस घातक खेल में ऐसे लोग भी शामिल होंगे, जो मेडिकल कचरे को नष्ट करने के बजाय चंद रुपयों के लिये उसे बेचकर मुनाफा कमा रहे हैं।

निस्संदेह, इस जानलेवा खेल के पीछे एक सुनियोजित सांठगांठ वाले गिरोह की भूमिका होगी। जिसके जरिये बायोमेडिकल कचरे को गोदामों से निकालकर स्क्रैप डीलरों के माध्यम से बेचा गया। पुलिस के छापे में गोदाम से खून से सने कॉटन पैड, प्रयोग की गई सिरिंज और खून के सैंपल वाली बोतलों समेत कई ऐसे मेडिकल वेस्ट मिले हैं जो घातक संक्रमण फैलाने का जरिया बन सकते हैं। कुछ लालची लोग मुनाफे के लिये यह जानलेवा काम कर रहे हैं, लेकिन सवाल यह कि नियामक तंत्र की मौजूदगी में ये खेल कैसे चल रहा था? उल्लेखनीय है कि पंजाब में अमृतसर, लुधियाना,मुक्तसर,मोहली, नकोदर और पठानकोट में छह बोयोमेडिकल वेस्ट ट्रीटमेंट की सुविधाएं मौजूद हैं। इन सभी यूनिटों द्वारा हर दिन बीस हजार किलोग्राम बायोमेडिकल कचरे का निस्तारण किया जाता है। जिसकी निगरानी के लिये पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एक बारकोडिंग प्रणाली के जरिये जानकारी जुटाता है। इतना ही नहीं, कचरा ढोने वाले वाहनों की ट्रैकिंग और अन्य जानकारियां ऑनलाइन अपलोड की जाती हैं। सवाल यह उठता है कि इस अपवित्र कृत्य की कमजोर कड़ी कहां है? पुलिस सूत्रों ने इशारा किया है कि बायोमेडिकल कचरे पर मोहाली की एक अधिकृत कचरा संग्रहण कंपनी के बारकोड लगे थे। स्पष्ट है कि मानव स्वास्थ्य के लिये घातक कचरे को वैध निपटान प्रक्रिया से गुजारने के बजाय मुनाफे के लिये बाजार में बेच दिया गया। कहना कठिन है कि यह खतरनाक खेल कब से चल रहा था और न जाने कितने लोगों को घातक संक्रमण का शिकार बना दिया गया होगा। निस्संदेह, यदि प्रवर्तन एजेंसियां ईमानदारी से सख्त कार्रवाई करें तो अपराधियों तक पहुंचने में मदद मिल सकती है। सूत्र बताते हैं कि इस प्रकरण में एक ऐसी कंपनी की कारगुजारी संदिग्ध है, जिसे बायोमेडिकल कचरे के अनुचित प्रबंधन मामले में पहले भी पकड़ा जा चुका है। यदि पहले ही दोषियों को सख्त दंड मिला होता तो शायद वे दुबारा ऐसा करने का दुस्साहस नहीं कर पाते। निस्संदेह, नियामक तंत्र की कोताही और हमारी कानून व्यवस्था के छिद्र ऐसे अपराधियों को फिर-फिर पनपने का मौका देते हैं।

सुपरफूड बनते ही खास हो जाता है आम का खाना

> पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री द्वारा खरीदने से झालमूड़ी चर्चा में है, चिंता है कि कहीं अतंर्राष्ट्रीय कम्पनियां इसे सुपरफूड न साबित कर दें। जैसे ही किसी खाद्य पदार्थ को सुपरफूड घोषित किया जाता है, वह अक्सर आम आदमी की पहुंच से दूर हो जाता है।

हरियाणा में रहने वाले निकट के परिवार की बहू का बचपन कोलकाता में बीता है। गुड़गांव में एक बहुराष्ट्रीय निगम में काम करती है, लेकिन नाश्ते में उसकी पहली पसंद झालमूड़ी है। एक बार बहुत साल पहले कोलकाता गई थी, तो झाझा स्टेशन पर लौकी के बराबर का खीरा और झालमूड़ी भी खाई थी। यह इतनी पसंद आई कि कोलकाता में हर दिन इसे खाती रही। यों भी कोलकाता में शाकाहारियों के लिए जगह-जगह मिलता यह खाद्य पदार्थ बहुत सुविधाजनक भी होता है। बंगाल के अलावा बिहार, झारखंड, उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि में भी यह लोकप्रिय खाना है। सड़क-सड़क इसे बिकते देखा जा सकता है। दिल्ली में भी खूब मिलता है। दस-बीस रुपये जेब पर भारी भी नहीं होते। साथ ही कम कैलोरी होने के कारण स्वास्थ्यवर्धक भी माना जाता है। भुने हुए चावल यानी कि मुरमुरे, जिन्हें देश के अलग-अलग भागों में कहीं लाई तो कहीं चिड़वा नाम से पुकारा जाता है। और भी बहुत से नाम होंगे। इनके साथ प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, धनिया, चटनी, नींबू, कच्चा सरसों का तेल और मसालों के साथ इसे बनाया जाता है। बहुत से स्थानों पर इसे भेलपूरी भी कहते हैं। घर में बनाकर भी इसे लोग खूब खाते हैं। यह सस्ता और पेट भराऊ भी होता है। कहते हैं कि इसे खाने-बनाने की शुरुआत उन्नीसवीं सदी में हुई थी। बहुत से अंग्रेज भी इसे स्वाद लेकर खाते थे। जब से प्रधानमंत्री मोदी ने कोलकाता के दुकानदार विक्रम शा की दुकान से दस रुपये की झालमूड़ी खाई, तब से इंटरनेट पर इसे खोजने वालों की बाढ़ आ गई। मोदी ने इस घटना को एक्स पर पोस्ट भी किया था। वह शाकाहारी हैं, मछली खा नहीं सकते थे, इसलिए इसे खाकर बंगालवासियों को संदेश दिया था कि उन्हें उनके खाने-पीने से कोई परहेज नहीं है। क्योंकि इसी तरह का प्रचार विरोधी पक्ष के द्वारा किया जा रहा था कि लोगों से उनका खाना तक छीन लिया जाएगा। इस घटना को सौ मिलियन व्यूज मिले थे। इंटरनेट पर छा गया था।

शायद इसलिए भी कि इस तरह की घटनाएं कभी-कभी ही होती हैं। दुकानदार विक्रम शा का कहना भी है कि उन्हें अंदाजा तक नहीं था कि कभी कोई प्रधानमंत्री, उन जैसे मामूली व्यक्ति की दुकान पर आ सकते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का दुःख है कि वह इतना घबरा गए कि जिंदगी का एक सुनहरा मौका खो दिया, जो अब कभी नहीं मिलेगा। वह मौका था-प्रधानमंत्री के हस्ताक्षर लेने का। गया, बिहार के रहने वाले विक्रम की दुकान रातोंरात मशहूर हो गई है। दूर-दूर से इसे देखने लोग आ रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा लोग उनके बारे में जानना चाहते हैं। बिक्री भी खूब हो रही है। उनके नाते-रिश्तेदार, गांव के लोग, इतनी बधाइयां दे रहे हैं कि फोन बजना ही बंद नहीं हो रहा। हालांकि, विक्रम के खिलाफ यह प्रचार भी किया गया था कि वह तो एक कमांडो हैं और यह घटना पहले से तैयार की गई थी। रातोंरात दुकान बनाई गई थी, जबकि विक्रम का कहना है कि वह तो बहुत दिनों से ये काम करते हैं। और कोई कमांडो नहीं, मामूली से दुकानदार हैं।

कैसे कोई घटना के वक्त संस्कृति, खानपान की आदतें देखकर, बहुत-सी कम्पनियां भी मैदान में कूद पड़ती हैं। वे किसी भी प्रसिद्धि को खूब भुना लेती हैं। बहुत-सी मशहूर कम्पनियां अब झालमूड़ी को पैकेट बंद खाने की तरह प्रस्तुत कर रही हैं। पांच, दस रुपये से लेकर पचहत्तर रुपये तक के पैकेट्स पेश किए जा रहे हैं। विदेश में रहने वाले एक लड़के ने बताया कि वहां के इंडियन स्टोर्स पर इसकी मांग बढ़ी है, इसलिए दुकानदार भारत से मंगा रहे हैं। हो सकता है कि दूसरे देशों में भारतीय और बहुत से विदेशी भी इसे खाना चाहेंगे। दशकों पहले अमेरिका की टाइम पत्रिका ने भारत के स्ट्रीट फूड पर एक लम्बा लेख छापा था। इसमें बताया गया था कि अपने यहां सड़क किनारे मिलने वाली खाद्य सामग्री स्वादिष्ट और उच्चकोटि की होती हैं।

जिस तरह से इन दिनों झालमूड़ी चर्चा में है, वह बात हैरत में भी डालती है। पहले कोई ऐसी घटना होती थी, तो कुछ ही लोगों को पता चलती थी। लेकिन अब तो मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए यह पल की पल में न केवल अपने देश में बल्कि दुनियाभर में पहुंच जाती है। ऐसे में यह भी लग रहा है कि कहीं अतंर्राष्ट्रीय कम्पनियां इस मामले में न कूद पड़ें और इसे सुपरफूड साबित कर दें। जैसे ही किसी खाद्य पदार्थ को सुपरफूड घोषित किया जाता है, वह अक्सर आम आदमी की पहुंच से दूर हो जाता है।

कुछ दिन पहले करौंदा को सुपरफूड घोषित किया गया है। अपने गांवों में करौंदे की झाड़ियां यों ही उग आती हैं। गुलाबी, सफेद, कहीं-कहीं हरे, लाल रंग के ये नन्हे फल बहुत खट्टे होते हैं। इन्हें मिर्च के साथ छौंककर, अचार डालकर, चटनी बनाकर या सब्जी, दाल में डालने के लिए सुखाकर, खटाई के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। पकने पर इसे चिड़ियां और बंदर भी खूब खाते हैं, क्योंकि तब इसका स्वाद खट्टा-मीठा हो जाता है। जब से इसे सुपरफूड घोषित किया गया है, यह बेहद महंगा हो गया है। दिल्ली में कई बार चार सौ रुपये किलो तक मिलता है। इसे सुपरफूड बनाने में कारण गिनाए गए हैं कि यह इम्यून सिस्टम को ताकतवर बनाता है। एंटी आक्सीडेंट यानी कि विषैले तत्वों का शरीर में नाश करता है। दिल के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। विटामिन सी, कैल्शियम, मैग्नीशियम से भरपूर है। कोलेस्ट्रोल को कम करता है। ब्लड प्रेशर घटाता है। तनाव कम करता है और त्वचा को चमकदार बनाता है। यह विदेशी बैरीज के मुकाबले भारत में आसानी से उपलब्ध है और सस्ता भी है। अब बताइए कि नन्हा-सा करौंदा और इतने गुणों से भरा, क्यों न इसकी मांग बढ़े, क्यों न महंगा हो और गरीब तथा मध्यवर्ग की थाली से दूर हो। यहां यह कहने का अर्थ यह कतई नहीं कि इस फल की विशेषताओं को लोगों को न बताया जाए या कि जो इसे बेचते हैं, उन्हें इसका पूरा दाम न मिले, लेकिन जैसे ही किसी खाने की चीज पर किसी बड़ी कम्पनी की नजर पड़ती है, वह आम लोगों के लिए दुर्लभ हो जाती है। इस प्रसंग में बाबा रामदेव की याद आती है। अपने टेलीविजन कार्यक्रमों में उन्होंने जब से घीया के फायदे बताने शुरू किए, इसके दामों में इतना उछाल आया कि खरीदना मुश्किल हो गया। इसका रस जगह-जगह मिलने लगा। कहीं यही हाल झालमूड़ी का तो न होगा।

कुछ दिन पहले मंडी हाउस के पास से गुजर रही थी। अरसे से यहां एक झालमूड़ी बेचने वाले को देखती हूं। उसके पास खरीददारों की भीड़ लगी थी। मेरा भी खाने का मन किया। काफी देर से नम्बर आ पाया। कीमत पूछी तो पचास रुपये। कुछ ही दिन पहले बीस रुपये का खाया था। थोड़े दिनों में अगर पांच सितारा होटलों में झालमूड़ी बिकने लगी तो जैसे चार-सौ-पांच सौ रुपये की एक काफी या चाय मिलती है, इसकी कीमतों में भी ऐसी बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है।

प्रेरणा

इंसानियत की असली शान

दुनिया में दौलत, ताकत और शोहरत पाने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं, लेकिन इतिहास उन्हीं लोगों को सच्चा सम्मान देता है जिनके दिल में इंसानियत जिंदा रहती है। इंसान का असली कद उसके महलों, ताजों और सेना से नहीं मापा जाता, बल्कि इस बात से तय होता है कि वह दूसरों के दुख को कितना समझता है। जब कोई शक्तिशाली व्यक्ति गरीब और कमजोर इंसान के आंसुओं को अपनी जिम्मेदारी समझ लेता है, तब वह केवल शासक नहीं रहता, बल्कि लोगों के दिलों का बादशाह बन जाता है। ऐसी ही एक प्रेरणादायक घटना हैदराबाद के निजाम महबूब अली खां से जुड़ी हुई है, जो बताती है कि सच्ची नेकी वही होती है जिसमें दिखावा नहीं, बल्कि दिल की करुणा शामिल हो।

हैदराबाद के निजाम महबूब अली खां अपने समय के बेहद प्रभावशाली और समृद्ध शासक माने जाते थे। उनके पास धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी, लेकिन उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे इंसानियत और धार्मिक सौहार्द को सबसे ऊपर रखते थे। वे अपने धर्मगुरु बाबा शर्फूद्दीन की दरगाह 'पहाड़-ए-शरीफ' पर हर साल बड़ी श्रद्धा के साथ उर्स मनाते थे। वहां का माहौल केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं रहता था, बल्कि वह इंसानों के बीच प्रेम और भाईचारे का प्रतीक बन जाता था। दो दिनों तक वहां हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदायों के लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की जाती थी। हर कोई सम्मानपूर्वक बैठकर खाना खाता और प्रेम का अनुभव करता।

महबूब अली खां का यह आदेश था कि कोई भी व्यक्ति भोजन को अपने साथ बांधकर नहीं ले जाएगा। इसका उद्देश्य यह था कि व्यवस्था बनी रहे और कोई भोजन का दुरुपयोग न करे। लेकिन कभी-कभी जीवन ऐसी परिस्थितियां सामने लाता है जहां नियमों से बड़ा इंसान का दर्द बन जाता है। उर्स के दूसरे दिन अचानक वहां हलचल मच गई। निजाम के नौकरों ने एक गरीब हिन्दू लड़के को पकड़ लिया था। लड़का चोरी-छुपे कुछ रोटियां अपने कपड़ों में बांधकर ले जा रहा था। नियम तोड़ने की वजह से नौकर उसे डांट रहे थे और शोरगुल बढ़ता जा रहा था। जब यह आवाज महबूब अली खां तक पहुंची तो वे स्वयं वहां आए। उन्होंने गुस्से या अहंकार में फैसला नहीं सुनाया, बल्कि पहले उस लड़के से सच्चाई जाननी चाही। उन्होंने शांत स्वर में पूछा कि वह खाना छुपाकर क्यों ले जा रहा था। इतना सुनते ही लड़का डर और शर्म से कांपने लगा। वह निजाम के पैरों में गिर पड़ा और रोते हुए बोला कि उसकी बहन गर्भवती है और पांच मील दूर रहती है। उसने कहा था कि वह इतनी लंबी दूरी तय करके यहां नहीं आ सकती, इसलिए उसके लिए कुछ रोटियां ले आना। लड़के की आवाज में कोई छल नहीं था, केवल मजबूरी और बहन के प्रति प्रेम था। महबूब अली खां ने केवल भावुक होकर निर्णय नहीं लिया। उन्होंने अपने एक आदमी को उस लड़के के साथ भेजा ताकि सच्चाई की जांच हो सके। जब पता चला कि लड़का सच कह रहा था, तब निजाम का दिल करुणा से भर उठा। उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि उस गर्भवती लड़की के लिए चांदी के बर्तनों में भोजन भेजा जाए और वे बर्तन वापस भी न लिए जाएं। यह केवल दान नहीं था, बल्कि एक गरीब परिवार के सम्मान की रक्षा थी। उन्होंने यह महसूस किया कि किसी मजबूर इंसान को अपराधी की तरह देखना सबसे बड़ी नाइंसाफी होती है। इस घटना की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें धर्म, जाति और ऊंच-नीच की कोई दीवार नहीं दिखाई देती। एक मुस्लिम शासक ने एक गरीब हिन्दू परिवार की सहायता केवल इसलिए की क्योंकि वह इंसानियत को सबसे बड़ा धर्म मानता था। आज के समय में जब छोटी-छोटी बातों पर समाज में विभाजन पैदा हो जाता है, तब यह घटना हमें याद दिलाती है कि भारत की असली ताकत उसकी साझा संस्कृति और मानवीय मूल्यों में है। यहां सदियों से लोग एक-दूसरे के त्योहारों, दुखों और खुशियों में शामिल होते आए हैं। यही परंपरा हमारी सभ्यता को महान बनाती है।

महबूब अली खां का व्यवहार यह भी सिखाता है कि बड़ा इंसान वही होता है जो नियमों के पीछे छिपे उद्देश्य को समझे। यदि वे केवल कानून और आदेश की कठोरता देखते, तो शायद उस लड़के को सजा मिलती। लेकिन उन्होंने नियम से पहले इंसान की पीड़ा को महत्व दिया। यही संवेदनशीलता किसी भी समाज को मानवीय बनाती है। कानून और अनुशासन जरूरी हैं, लेकिन जब उनमें दया और करुणा शामिल हो जाए, तभी न्याय पूर्ण होता है। यह घटना हमें अपने जीवन के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। अक्सर हम दूसरों की गलतियों को तुरंत अपराध मान लेते हैं, बिना यह जाने कि उसके पीछे कौन-सी मजबूरी छिपी है। किसी गरीब का झूठ, किसी भूखे की चोरी या किसी कमजोर की गलती के पीछे कई बार ऐसी पीड़ा होती है जिसे समाज देखना ही नहीं चाहता। अगर हर व्यक्ति थोड़ी संवेदना और धैर्य से काम ले, तो दुनिया में नफरत और कठोरता काफी कम हो सकती है। नेकी का अर्थ केवल पैसे बांटना नहीं होता। सच्ची नेकी वह है जिसमें किसी के आत्मसम्मान को ठेस न पहुंचे। महबूब अली खां ने उस लड़की को भोजन भेजते समय चांदी के बर्तन इसलिए दिए ताकि उसे यह महसूस न हो कि वह दया की पात्र है। उन्होंने सहायता को सम्मान के साथ जोड़ा। यही किसी भी परोपकार की सबसे ऊंची अवस्था होती है। जब मदद करने वाला व्यक्ति सामने वाले को छोटा महसूस न होने दे, तभी उसका उपकार सच्चा कहलाता है।

आज समाज को ऐसी ही सोच की आवश्यकता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में इंसान संवेदनाओं से दूर होता जा रहा है। लोग अपने स्वार्थ और सफलता में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें दूसरों की परेशानियां दिखाई ही नहीं देतीं। जबकि इतिहास बताता है कि समाज केवल तकनीक और धन से महान नहीं बनता, बल्कि दया, सहानुभूति और भाईचारे से महान बनता है। एक छोटा-सा दयालु व्यवहार किसी के जीवन में उम्मीद की नई रोशनी जगा सकता है।

महबूब अली खां की यह घटना केवल एक कहानी नहीं, बल्कि इंसानियत का जीवंत संदेश है। यह हमें सिखाती है कि धर्म का असली अर्थ प्रेम, सेवा और करुणा है। इंसान का दिल जितना बड़ा होता है, वह उतना ही महान बनता है। सत्ता और संपत्ति समय के साथ खत्म हो जाती है, लेकिन दया और नेकी की मिसालें सदियों तक लोगों के दिलों में जीवित रहती हैं। यही कारण है कि आज भी ऐसे प्रसंग सुनकर मन श्रद्धा से भर उठता है और यह विश्वास मजबूत होता है कि इंसानियत से बढ़कर दुनिया में कोई धर्म नहीं।

दोस्त रूस से तेल खरीदते थे, खरीदते रहेंगे, भारत का ये रूप देख अमेरिका को भी बोलना पड़ा- 30 दिन की राहत और ले लो

भारत और रूस के बीच होने वाले कच्चे तेल कारोबार का क्या होगा? क्या अमेरिका अपनी प्रतिबंध से छूट जारी रखेगा? क्या भारत उस छूट के आधार पर रूस से तेल खरीदेगा? इस सवाल के जवाब में जो जवाब भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने जो जवाब दिया है वो वाकई में भारत की तरफ से एक बड़ा बयान है क्योंकि उन्होंने यह साफ कर दिया है कि हालात कैसे भी हो कोई वेबर हो या ना हो भारत अपना तेल रूस से खरीदता रहेगा। उन्होंने साफ तौर पर कहा है कि भारत का रुख पूरी तरह से अडिग है कि भारत अपनी आयात रणनीति पूरी तरह से सुसंगत रखता है और अपनी जरूरत के हिसाब से तेल खरीद करता है। ऐसे में रूस पर अमेरिकी छूट के संबंध में उन्होंने यह जोर दिया कि पहले भी रूस से खरीदारी जारी थी और छूट से पहले भी छूट के दौरान भी और अब भी यह खरीद जारी रहेगी। दरअसल लगातार यह सवाल उठ रहे थे कि भारत क्या रूस से तेल खरीदना बंद कर देगा क्योंकि अमेरिकी वेवर की मियाद खत्म हो रही थी। ऐसे में पहले रूस की तरफ से यह कहा गया था कि वह भारत को कच्चे तेल की सप्लाई कम नहीं होने देगा। भारत को जितना कच्चा तेल चाहिए रूस उतना सप्लाई करने के लिए तैयार था। ऐसे में भारत की तरफ से यह स्टेटमेंट का आना साफ तौर पर यह बताता है कि अब अमेरिका तेल के मामले में कोई प्रतिबंध लगाए या ना लगाए। भारत रूस से अपनी तेल खरीद की नीति तब तक जारी रखेगा जब तक उसकी जरूरतें वहां से पूरी हो रही हैं और जनता के हित को ध्यान में रखकर जिस तरीके से तेल खरीद की जाती है जिससे तेल की कीमतें स्थिर होती रहे। वह भारत की प्राथमिकता में रहेगा। इस बीच अमेरिका ने रूसी तेल खरीदने के लिए प्रतिबंधों में दी गई छूट को बढ़ाने का फैसला किया है। अमेरिका की यह समय सीमा शनिवार को खत्म हो गई थी। रॉयटर्स के मुताबिक यह फैसला कई देशों की ओर से रूसी तेल खरीदने के लिए और समय मांगने के बाद लिया गया है। सूत्रों ने बताया है कि अमेरिका इस छूट को 30 दिनों के लिए और बढ़ाएगा। गौरतलब है कि रूसी कच्चे तेल का एक प्रमुख खरीदार भारत ने इससे पहले कहा था कि वह अमेरिकी छूट के बावजूद मॉस्को से कच्चा तेल खरीद रहा है और व्यावसायिक व्यवहार्यता और ऊर्जा सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए इसका आयात जारी रखेगा। हालांकि, इस छूट से भारतीय रिफाइनरियों के लिए रूसी तेल का भारी आयात जारी रखना आसान हो गया है। रूसी तेल की खरीद पर अमेरिका की ओर से दी गई छूट की अवधि खत्म होने पर क्या किया जाएगा, इस सवाल पर सुजाता ने कहा कि 'छूट की अवधि से पहले भी रूसी तेल खरीदा जा रहा था, उस दौरान भी खरीदा जा रहा था और अब भी खरीदा जा रहा है, क्योंकि यह कंपनियों के कमर्शल फैसले से जुड़ी बात है।' हालांकि उन्होंने यह भी साफ किया कि 'देश में कच्चे तेल की कोई तंगी नहीं है। इसकी सप्लाई का पूरा इंतजाम किया गया है। छूट मिले या न मिले, कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

ऑयल मार्केटिंग कंपनियों को देश में पेट्रोल-डीजल और LPG की बिक्री पर हो रहा रहा नुकसान कीमतें बढ़ाए जाने के बाद नीचे आया है, लेकिन अब भी यह काफी ऊंचे स्तर पर है। पेट्रोलियम एंड नैचरल गैस मिनिस्ट्री में जॉइंट सेक्रेटरी सुजाता शर्मा ने कहा कि पेट्रोल-डीजल और LPG पर OMC की रोजाना की अंडर-रिकवरी 750 करोड़ रुपये है। शर्मा ने यह भी कहा कि रूसी तेल खरीदने पर अमेरिकी छूट रहे या न रहे, भारत के लिए कच्चे तेल की सप्लाई पर कोई आंच नहीं आएगी। पेट्रोल-डीजल के दाम 3-3 रुपये प्रति लीटर बढ़ाए जाने से पहले पिछले हफ्ते तेल और गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा था कि OMC को 1000 करोड़ रुपये रोजाना की अंडर-रिकवरी का सामना करना पड़ रहा है। क्या सरकारी तेल कंपनियों के नुकसान की सरकार भरपाई करेगी, इस पर सुजाता ने कहा कि कंपनियों को राहत पैकेज देने का फिलहाल कोई प्लान नहीं है। उन्होंने आने वाले दिनों में पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ाए जा सकने के बारे में कहा, 'इस बारे में कोई अनुमान नहीं लगा सकते।' इंडस्ट्री सूत्रों के मुताबिक, दाम बढ़ाए जाने के बाद भी OMC को पेट्रोल पर करीब 11 रुपये/लीटर और डीजल पर 39 रुपये/लीटर की अंडर रिकवरी है। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने यह कदम वैश्विक कच्चे तेल के बाजार में स्थिरता लाने और सबसे कमजोर देशों को ऊर्जा संकट से बचाने के लिए उठाया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए बेसेंट ने लिखा कि अमेरिकी ट्रेजरी विभाग एक अस्थायी 30 दिनों का सामान्य लाइसेंस जारी कर रहा है ताकि सबसे कमजोर देशों को समुद्र में फंसे हुए रूसी तेल तक अस्थायी रूप से पहुंचने की क्षमता मिल सके। यह विस्तार उन्हें अतिरिक्त लचीलापन (फ्लेक्सिबिलिटी) देगा, और हम इन देशों की जरूरत के हिसाब से उन्हें विशेष लाइसेंस देने के लिए मिलकर काम करेंगे। यह सामान्य लाइसेंस भौतिक कच्चे तेल के बाजार को स्थिर करने में मदद करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि तेल सबसे अधिक ऊर्जा-संवेदनशील देशों तक पहुंचे। इससे चीन की रियायती तेल का भंडारण करने की क्षमता कम हो जाएगी और मौजूदा आपूर्ति को सबसे जरूरतमंद देशों तक पहुंचाने में भी मदद मिलेगी। अमेरिकी वित्त विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (OFAC) द्वारा 17 अप्रैल को जारी एक सामान्य लाइसेंस के अनुसार, प्रतिबंधित जहाजों सहित टैंकरों पर लदे रूसी तेल और पेट्रोलियम उत्पादों को 17 अप्रैल को पूर्वी समयानुसार 12:01 बजे (भारतीय समयानुसार सुबह 9:31 बजे) या उससे पहले अधिकांश देशों द्वारा 16 मई तक खरीदा और प्राप्त किया जा सकता था। OFAC द्वारा संशोधित सामान्य लाइसेंस के माध्यम से इस छूट को अब 17 जून तक बढ़ा दिया गया है।

अभियान

दादी-नानी की सीख में छिपी सकारात्मक जीवनशैली

भारतीय परिवारों में बचपन से ही ऐसी अनेक बातें सुनने को मिलती हैं जिन्हें सुनकर उस समय शायद हम मुस्कुरा देते थे, लेकिन जैसे-जैसे जीवन आगे बढ़ता है, उन बातों की गहराई समझ में आने लगती है। घर के बड़े-बुजुर्ग हमेशा कहते थे कि किसी शुभ काम के लिए निकलो तो दाहिना पैर पहले बाहर रखना चाहिए। परीक्षा देने जाना हो, नौकरी के इंटरव्यू के लिए निकलना हो, व्यापार शुरू करना हो या किसी महत्वपूर्ण यात्रा पर जाना हो, दादी-नानी यही सलाह देती थीं कि शुरुआत शुभ तरीके से करो। आधुनिक दौर में कई लोग इसे केवल अंधविश्वास या पुरानी सोच मान लेते हैं, लेकिन यदि इस परंपरा को ध्यान से समझा जाए तो इसके पीछे केवल धार्मिक मान्यता नहीं, बल्कि मनोविज्ञान, योग, ऊर्जा संतुलन और जीवन को सकारात्मक दिशा देने का गहरा संदेश छिपा हुआ दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति में हर छोटी बात को किसी न किसी जीवन मूल्य से जोड़कर देखा गया है। यहां केवल पूजा-पाठ ही नहीं, बल्कि रोजमर्रा की आदतों को भी आध्यात्मिक और मानसिक संतुलन से जोड़ दिया गया। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने जीवन के हर कार्य के लिए कुछ नियम और संकेत बनाए। ये नियम केवल डर पैदा करने के लिए नहीं थे, बल्कि व्यक्ति के भीतर अनुशासन और सजगता विकसित करने का माध्यम थे। घर से निकलते समय दाहिना पैर पहले रखने की परंपरा भी इसी सोच का हिस्सा थी। इसका उद्देश्य यह था कि व्यक्ति किसी भी कार्य की शुरुआत आत्मविश्वास और सकारात्मक मानसिकता के साथ करे।

भारतीय धार्मिक मान्यताओं में दाहिने हिस्से को शुभता का प्रतीक माना गया है। संस्कृत ग्रंथों और वैदिक परंपराओं में दाहिने हाथ से पूजा करना, यज्ञ में आहुति देना, दान करना और प्रसाद ग्रहण करना श्रेष्ठ माना गया है। यही विचार दाहिने पैर के साथ भी जुड़ गया। माना गया कि यदि कोई व्यक्ति दाहिने पैर से यात्रा या कार्य की शुरुआत करता है, तो उसके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह विश्वास व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। जब मन में यह भावना होती है कि शुरुआत शुभ हुई है, तो व्यक्ति का आत्मविश्वास भी बढ़ जाता है।

योग और आयुर्वेद की दृष्टि से भी यह परंपरा बेहद रोचक मानी जाती है। भारतीय योगशास्त्र में शरीर के भीतर बहने वाली ऊर्जा को नाड़ियों के माध्यम से समझाया गया है। इनमें पिंगला नाड़ी को सूर्य नाड़ी कहा जाता है, जो शरीर के दाहिने भाग से संबंधित मानी जाती है। यह नाड़ी ऊर्जा, साहस, सक्रियता और आत्मबल का प्रतीक होती है। वहीं इड़ा नाड़ी शरीर के बाएं हिस्से से जुड़ी मानी जाती है, जो शांति और भावनात्मक संतुलन से संबंधित है। जब व्यक्ति दाहिने पैर से बाहर कदम रखता है, तो इसे सक्रिय ऊर्जा के साथ जीवन की शुरुआत करना माना जाता है। यह विचार केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि मानसिक रूप से स्वयं को तैयार करने की प्रक्रिया भी है। यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो मानव मस्तिष्क विश्वास के अनुसार प्रतिक्रिया करता है। आधुनिक मनोविज्ञान में इसे सकारात्मक मानसिक प्रभाव माना जाता है। यदि कोई व्यक्ति यह सोचकर घर से निकलता है कि उसने शुभ शुरुआत की है, तो उसका मन अधिक शांत और आत्मविश्वासी रहता है। वह चुनौतियों का सामना अधिक धैर्य और सकारात्मक सोच के साथ करता है। कई बार व्यक्ति की सफलता केवल उसकी मेहनत पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति और आत्मविश्वास पर भी निर्भर करती है। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने सकारात्मक संकेतों और शुभ शुरुआत को इतना महत्व दिया।

भारतीय समाज में परंपराओं का एक बड़ा उद्देश्य सामूहिक अनुशासन बनाए रखना भी था। पुराने समय में आज की तरह स्कूलों, किताबों और वैज्ञानिक जानकारी का इतना विस्तार नहीं था। लोग अनुभवों और सामाजिक परंपराओं के माध्यम से जीवन जीने की कला सीखते थे। दादी-नानी बच्चों को कहानियों और छोटी-छोटी आदतों के जरिए संस्कार सिखाती थीं। जब वे कहती थीं कि दाहिना पैर पहले बाहर रखो, तो इसका अर्थ यह भी था कि जीवन में हर कदम सोच-समझकर और सजगता के साथ उठाना चाहिए। भारतीय संस्कृति में शुभ शुरुआत का विशेष महत्व रहा है। विवाह, गृह प्रवेश, पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में दाहिने पैर और दाहिने हाथ का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है। जब नवविवाहिता पहली बार अपने ससुराल में प्रवेश करती है, तो उससे दाहिना पैर आगे रखने को कहा जाता है। इसका अर्थ यह माना जाता है कि वह घर में सुख, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा लेकर आ रही है। इसी तरह मंदिर में प्रवेश करते समय भी दाहिने पैर से कदम रखना शुभ माना जाता है। इन परंपराओं का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर पवित्रता और सकारात्मकता का भाव जागृत करना था। वास्तु शास्त्र में भी दाहिने हिस्से को शुभता और सकारात्मक ऊर्जा से जोड़ा गया है। वास्तु के अनुसार घर और वहां रहने वाले लोगों की ऊर्जा का गहरा संबंध होता है। माना जाता है कि जब व्यक्ति दाहिने पैर से बाहर निकलता है, तो वह सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपने कार्यों की शुरुआत करता है। यही कारण है कि आज भी कई लोग किसी महत्वपूर्ण काम, परीक्षा, इंटरव्यू या यात्रा पर निकलते समय इन परंपराओं का पालन करते हैं। इससे उन्हें मानसिक रूप से विश्वास और संतुलन मिलता है। आज का समय अत्यधिक भागदौड़ और तनाव से भरा हुआ है। लोग मानसिक दबाव, चिंता और अस्थिरता का सामना कर रहे हैं। ऐसे समय में सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास बेहद जरूरी हो जाते हैं। हमारे पूर्वजों ने छोटी-छोटी परंपराओं के माध्यम से व्यक्ति के भीतर यही सकारात्मकता बनाए रखने का प्रयास किया था। घर से निकलते समय दाहिना पैर पहले रखना केवल एक धार्मिक नियम नहीं था, बल्कि यह अपने मन को सकारात्मक दिशा देने का तरीका था। जब व्यक्ति दिन की शुरुआत अच्छे विचारों और विश्वास के साथ करता है, तो उसका प्रभाव पूरे दिन के व्यवहार पर दिखाई देता है। दादी-नानी की बातें केवल पुराने जमाने की आदतें नहीं थीं, बल्कि वे जीवन के अनुभवों से निकली हुई सीख थीं। वे जानती थीं कि मनुष्य का मन जितना शांत और सकारात्मक रहेगा, उसका जीवन उतना ही संतुलित होगा। इसलिए उन्होंने छोटी-छोटी बातों को भी संस्कार और परंपरा का हिस्सा बना दिया। इन परंपराओं ने परिवारों को जोड़े रखा और समाज में अनुशासन बनाए रखा। बच्चे बड़ों की बातों का सम्मान करना सीखते थे और धीरे-धीरे उनके भीतर जीवन के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित होती थी। आधुनिक युग में विज्ञान ने जीवन को नई दिशा दी है और हर बात को तर्क की कसौटी पर परखा जाने लगा है। यह आवश्यक भी है, लेकिन इसके साथ यह समझना भी जरूरी है कि हर परंपरा केवल अंधविश्वास नहीं होती। कई परंपराओं के पीछे व्यवहारिक जीवन और मानसिक संतुलन का गहरा ज्ञान छिपा होता है। यदि हम उन्हें समझने का प्रयास करें, तो उनमें जीवन को बेहतर बनाने वाले कई महत्वपूर्ण संदेश मिल सकते हैं। दाहिने पैर से बाहर निकलने की परंपरा हमें यह सिखाती है कि जीवन में हर नई शुरुआत सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के साथ करनी चाहिए। जब मन में विश्वास होता है, तो कठिन परिस्थितियां भी आसान लगने लगती हैं। सकारात्मक ऊर्जा और मानसिक संतुलन मनुष्य को आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। यही कारण है कि हमारे पूर्वज शुभ संकेतों और अच्छी शुरुआत को इतना महत्व देते थे। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी खूबी यह रही है कि उसने जीवन के साधारण कार्यों को भी गहरे जीवन दर्शन से जोड़ दिया। यहां हर परंपरा के पीछे मनुष्य के मानसिक और सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने की सोच थी। दादी-नानी की बातें आज भी इसलिए याद आती हैं क्योंकि उनमें केवल परंपरा नहीं, बल्कि अनुभवों की सच्चाई छिपी होती थी। वे जानती थीं कि जीवन केवल मेहनत से नहीं चलता, बल्कि उसके लिए मानसिक शक्ति, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास भी जरूरी होता है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम अपनी परंपराओं को आंख बंद करके मानने या पूरी तरह नकारने के बजाय उन्हें समझने की कोशिश करें। यदि किसी परंपरा से व्यक्ति को मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सकारात्मकता मिलती है, तो उसका महत्व अपने आप बढ़ जाता है। घर से बाहर निकलते समय दाहिना पैर पहले रखने की परंपरा भी यही संदेश देती है कि जीवन में हर कदम विश्वास और शुभ भावना के साथ उठाना चाहिए।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

धोलेरा में सेमीकंडक्टर उद्योग में नौकरियों की बहार! आईटीआई-धोलेरा से यूएचपी सेमीकंडक्टर कोर्स का देश का पहला बैच पास आउट

- यहां प्रशिक्षित छात्रों को धोलेरा में ही सेमीकंडक्टर उद्योग में नौकरी मिले, ऐसी व्यवस्था की गई
- धोलेरा स्थित आईटीआई में टाटा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स द्वारा गुजरात सरकार और टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के सहयोग से प्रशिक्षण दिया जाता है
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में सेमीकंडक्टर उद्योग को मिली रफ्तार : राज्य सरकार ने उद्योगों को जरूरी कुशल मानवबल उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न कंपनियों के साथ स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू किए
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में सेमीकंडक्टर उद्योग ने वैश्विक पहचान बनाई, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात 1.25 लाख करोड़ रुपए के निवेश और भारत की कुल मंजूर सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता में लगभग 40 फीसदी हिस्सेदारी के साथ बना सिरमौर
- यह देश का पहला ऐसा प्रयोग है, जहां आईटीआई में सेमीकंडक्टर के लिए तैयार क्लीनरूम प्रशिक्षण की सुविधा स्थापित की गई है और स्किलिंग प्रोग्राम को सीधे देश के कॉमर्शियल सेमीकंडक्टर फैब के साथ जोड़ा गया है

गांधीनगर : गुजरात के धोलेरा और साणंद में सेमीकंडक्टर उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। इस उद्योग की कुशल मानवबल की जरूरत को पूरा करने की दिशा में गुजरात सरकार ने एक महत्वपूर्ण कार्य शुरू किया है।

राज्य के सेमीकंडक्टर हब धोलेरा में स्थित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) से हाल ही में 'यूएचपी सेमीकंडक्टर वेल्डिंग प्रोग्राम' का 16 छात्रों का पहला बैच पास आउट हो गया है और दूसरे बैच की शुरुआत भी हो गई है।

'यूएचपी (अल्ट्रा हाई प्योरिटी) सेमीकंडक्टर वेल्डिंग प्रोग्राम' आईटीआई स्तर पर पढ़ाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण शुरूआत है, जो सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग के लिए क्लीनरूम के लिए विशेष मानवबल तैयार करता है। यह प्रोग्राम टाटा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स (टाटा आईआईएस) द्वारा गुजरात सरकार और टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के सहयोग से चलाया जाता है।

यह देश का अपनी तरह का पहला ऐसा प्रयोग है, जहां औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में सेमीकंडक्टर के लिए तैयार क्लीनरूम प्रशिक्षण की सुविधा स्थापित की गई है और यह स्किलिंग प्रोग्राम सीधे देश में विकसित हो रहे कॉमर्शियल सेमीकंडक्टर फैब से जुड़ा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में सेमीकंडक्टर उद्योग को नई रफ्तार मिली है और इन उद्योगों के लिए जरूरी कुशल मानवबल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने विभिन्न कंपनियों के साथ स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रम शुरू किए हैं।

इस प्रोग्राम में छात्रों को अल्ट्रा हाई प्योरिटी (यूएचपी) वेल्डिंग में प्रशिक्षण दिया जाता है, जो सेमीकंडक्टर फैब्स में कंटेमिनेशन-मुक्त गैस डिलीवरी और प्रोसेस पाइपिंग सिस्टम के लिए जरूरी विशेष कुशलता प्रदान करता है। इस प्रोग्राम में आईटीआई में अध्ययनरत या किसी भी ट्रेड से उत्तीर्ण हुए छात्र प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए किसी विशेष ट्रेड की पूर्व शर्त नहीं है। उम्मीदवारों का चयन टाटा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स द्वारा किया जाता है।

इस प्रोग्राम से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने आईटीआई धोलेरा में कंटेनराइज्ड आईएसओ क्लास 1 लेक क्लीनरूम की सुविधा स्थापित की है। इस सुविधा का परिचालन पूरी तरह से टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा किया जाता है और इसके लिए जरूरी फंड भी कंपनी की ओर से दिया गया है। जिससे आईटीआई और गुजरात सरकार पर किसी प्रकार के पूंजी खर्च का बोझ नहीं पड़ा है।

यह लैब वास्तविक सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग की परिस्थितियों का निर्माण करता है, जिससे छात्रों को रीयल क्लीनरूम माहौल में प्रैक्टिकल प्रशिक्षण मिलता है। यानी, छात्रों को ऐसा अनुभव होता है मानों वे सचमुच किसी सेमीकंडक्टर उद्योग में काम कर रहे हों, और उन्हें प्रशिक्षण भी उसी प्रकार दिया जाता है।

इस लैब में ऑर्बिटल वेल्डिंग मशीनें, इंफ्रारेड (आईआर) फ्यूजन वेल्डिंग सिस्टम, हीलियम लीक टेस्टिंग सिस्टम, प्रेशर टेस्टिंग सेटअप और एयर लॉक तथा एयर शॉवर सिस्टम जैसे क्लीनरूम इंफ्रास्ट्रक्चर सहित विशेष उपकरण रखे गए हैं।

यह प्रोग्राम छह सप्ताह का है, जिसमें छात्रों को अहमदाबाद स्थित आईआईएस में दो सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाता है और उसके बाद आईटीआई धोलेरा स्थित क्लीनरूम फैसिलिटी में चार सप्ताह की एडवांस ट्रेनिंग दी जाती है।

छात्रों को क्लीनरूम प्रोटोकॉल, प्रिसिजन ट्यूब तैयारी, ऑर्बिटल और आईआर फ्यूजन वेल्डिंग, लीक टेस्टिंग, गुणवत्ता निरीक्षण और डॉक्यूमेंटेशन प्रैक्टिस का प्रशिक्षण दिया जाता है। लगभग 70 फीसदी प्रशिक्षण हैंड्स-ऑन (व्यावहारिक अनुभव या करके सीखना) होता है, जिसमें प्रशिक्षुओं के प्रदर्शन का निरंतर मूल्यांकन और ट्रैकिंग की जाती है। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स के इन-हाउस ट्रेनर्स छात्रों को प्रशिक्षण देते हैं और यह संपूर्ण पाठ्यक्रम भी टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा निर्धारित उद्योगों की जरूरतों के मुताबिक तैयार किया गया है।

उल्लेखनीय है कि गुजरात में सेमीकंडक्टर उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है और सरकार निजी क्षेत्र के साथ मिलकर युवाओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान कर उद्योग के लिए कुशल मानवबल तैयार कर रही है। इसी कड़ी में, धोलेरा और आसपास के क्षेत्रों के कुल 16 छात्रों ने इस विशेष प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है और दूसरे बैच को प्रशिक्षण देने की शुरुआत भी हो गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में सेमीकंडक्टर उद्योग ने वैश्विक पहचान बनाई है। उधर, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात करीब 1.25 लाख करोड़ रुपए के निवेश और भारत की कुल मंजूर सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता में लगभग 40 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सेमीकंडक्टर क्षेत्र का सिरमौर बन गया है।

यहां से पढ़कर निकले छात्रों की प्रोफाइल सेमीकंडक्टर उद्योग को भेजी गई

इस प्रोग्राम के ग्रेजुएट्स को यूएचपी-सर्टिफाइड प्रिसिजन वेल्डर्स के तौर पर, क्लीनरूम के अनुभव के साथ काम करने के लिए तैयार किया गया है। उनका विवरण (प्रोफाइल्स) टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा स्वीकृत जनरल कॉन्ट्रैक्टर्स को दी गई हैं। ये कॉन्ट्रेक्टर धोलेरा स्थित सेमीकॉन फैब पर काम कर रहे हैं। इससे इन प्रशिक्षुओं को सीधे नौकरी के अवसर मिलेंगे। यहां प्रशिक्षित छात्रों के लिए सेमीकंडक्टर फैब्स, ईपीसी (इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण) कॉन्ट्रैक्टर्स और एडवांस मैन्युफैक्चरिंग माहौल में उपयोग में लिए जाने वाले हाई-प्योरिटी पाइपिंग और गैस डिलीवरी सिस्टम्स में भी अवसर उपलब्ध हैं।

गुजरात बना भारत की सेमीकंडक्टर क्रांति का अगुवा

गुजरात भारत की सेमीकंडक्टर क्रांति का अगुवा राज्य है। राज्य ने 'गुजरात सेमीकंडक्टर पॉलिसी 2022-27' लागू की है, जो उद्योगों को वित्तीय प्रोत्साहन, भूमि आवंटन और त्वरित मंजूरियों के साथ-साथ बिजली, पानी और गैस जैसी आवश्यक सुविधाएं प्रदान करती है। राज्य की रणनीतिक भौगोलिक स्थिति, लंबी तटरेखा, प्रमुख बंदरगाह, दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (डीएमआईसी) के साथ कनेक्टिविटी तथा एयरपोर्ट, हाईवे एवं रेलवे सुविधाएं उद्योगों के लिए बहुत ही अनुकूल हैं।

गुजरात सरकार के विभिन्न प्रयासों का नतीजा है कि आज राज्य भारत की कुल मंजूर सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता में लगभग 40 फीसदी की हिस्सेदारी रखता है, जिसमें लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपए का निवेश शामिल है।

गर्मियों में बालों की देखभाल बन सकती है खूबसूरती का सबसे बड़ा राज -शहनाज़ हुसैन

गर्मी का मौसम अपने साथ केवल तेज धूप और पसीना ही नहीं लाता, बल्कि यह बालों और त्वचा के लिए भी कई तरह की समस्याएं लेकर आता है। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, शरीर में पसीना अधिक आने लगता है और इसका सबसे ज्यादा असर हमारे स्कैल्प यानी सिर की त्वचा पर दिखाई देता है। बाल चिपचिपे होने लगते हैं, उनमें बदबू आने लगती है, डैंड्रफ की समस्या बढ़ जाती है और धीरे-धीरे बाल कमजोर होकर टूटने और झड़ने लगते हैं। यही कारण है कि गर्मियों में बालों की विशेष देखभाल करना बेहद जरूरी हो जाता है। यदि समय रहते सही तरीके अपनाए जाएं, तो न केवल बालों को झड़ने से बचाया जा सकता है, बल्कि उन्हें स्वस्थ, घना और चमकदार भी बनाया जा सकता है।

गर्मियों में सबसे बड़ी समस्या पसीने की होती है। जब शरीर अधिक गर्म होता है तो पसीने की ग्रंथियां सक्रिय हो जाती हैं। सिर की त्वचा पर जमा पसीना धूल, गंदगी और बैक्टीरिया के साथ मिलकर स्कैल्प को नुकसान पहुंचाने लगता है। पसीने में मौजूद लेक्टिक एसिड बालों में पाए जाने वाले केराटिन के संपर्क में आकर बालों की जड़ों को कमजोर करता है। यही वजह है कि इस मौसम में बालों का झड़ना अचानक बढ़ जाता है। कई लोगों को ऐसा लगता है कि केवल धूप बालों को नुकसान पहुंचाती है, लेकिन असल में पसीना और नमी भी उतने ही बड़े कारण होते हैं।

गर्मी और उमस के कारण स्कैल्प में चिकनाई बढ़ जाती है। अधिक तेल और पसीना मिलकर बालों के रोमछिद्रों को बंद कर देते हैं। जब स्कैल्प के पोर्स बंद हो जाते हैं, तो बालों को पर्याप्त ऑक्सीजन और पोषक तत्व नहीं मिल पाते। इससे बाल कमजोर होने लगते हैं और उनकी ग्रोथ रुक जाती है। कई बार यही स्थिति फंगल संक्रमण और डैंड्रफ का कारण बन जाती है। सिर में खुजली, जलन और बदबू जैसी समस्याएं भी इसी वजह से बढ़ती हैं। यदि समय पर ध्यान न दिया जाए तो बाल पतले और बेजान दिखने लगते हैं।

गर्मियों में धूप का असर भी बालों पर काफी गहरा पड़ता है। तेज सूर्य किरणें बालों की प्राकृतिक नमी को खत्म कर देती हैं। लगातार धूप में रहने से बाल सूखे, कमजोर और रूखे हो जाते हैं। इससे दोमुंहे बालों की समस्या भी बढ़ जाती है। कामकाज या पढ़ाई के कारण जब लोग लंबे समय तक बाहर रहते हैं, तो स्कैल्प को लगातार गर्मी और प्रदूषण का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि इस मौसम में बालों को अतिरिक्त पोषण और सुरक्षा की जरूरत होती है।

बालों को स्वस्थ रखने के लिए सबसे जरूरी है स्कैल्प की सफाई। गर्मियों में बालों को नियमित रूप से धोना चाहिए ताकि पसीना और गंदगी सिर में जमा न हो सके। हालांकि बहुत ज्यादा शैंपू का इस्तेमाल भी नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिए हल्के और माइल्ड शैंपू का प्रयोग करना बेहतर होता है। बाल धोने के बाद कंडीशनर का उपयोग जरूर करना चाहिए ताकि बालों की नमी बनी रहे। कई लोग गर्मियों में सिर पर बहुत अधिक तेल लगा लेते हैं, लेकिन इससे पसीना और गंदगी ज्यादा चिपकने लगती है। इसलिए हल्के तेल का सीमित मात्रा में उपयोग करना अधिक फायदेमंद होता है।

स्कैल्प मसाज गर्मियों में बेहद लाभकारी मानी जाती है। हल्के हाथों से तेल की मालिश करने से सिर में रक्त संचार बेहतर होता है और बालों की जड़ों को पोषण मिलता है। आंवला तेल, नारियल तेल और बादाम तेल बालों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। गर्म तेल से की गई हल्की मालिश स्कैल्प को रिलैक्स करती है और बालों को प्राकृतिक नमी प्रदान करती है।

राजस्थान के मेड़ता को मिला बड़ा रेल गिफ्ट!,रोजगार के खुलेंगे नए द्वार, यात्रियों को मिलेगा बेहतर और समयबद्ध सफर

राजस्थान के रेल इतिहास में एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। मेड़ता रोड स्टेशन पर राज्य का पहला मेनलाइन इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट (MEMU) शेड विकसित किया जा रहा है। करीब 60 करोड़ की लागत वाली यह महत्वाकांक्षी परियोजना न सिर्फ रेलवे की क्षमता बढ़ाएगी बल्कि क्षेत्रीय विकास को भी नई दिशा देगी।

यह शेड मौजूदा डीजल कार शेड को अपग्रेड करके आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। परियोजना के तहत पिट लाइनों का विद्युतीकरण, ट्रैक्शन इंस्टॉलेशन, सिविल कार्य, व्हील लेथ की स्थापना और अत्याधुनिक मेंटेनेंस सिस्टम विकसित किए जा रहे हैं। इसकी शुरुआत वर्ष 2022-23 में हुई थी और पूरा होने पर यह लगभग 50 MEMU रेक के रखरखाव में सक्षम होगा।

इस शेड के शुरू होने से रेलवे की मेंटेनेंस क्षमता में बड़ा इजाफा होगा, जिससे ट्रेनों की उपलब्धता बढ़ेगी और संचालन ज्यादा सुचारू व कुशल होगा। इलेक्ट्रिक ट्रेन सेवाओं को गति मिलेगी और अधिक इलेक्ट्रिक ट्रेनों के उपयोग से किराया नियंत्रण में मदद मिलेगी जिससे यात्रा और किफायती होगी।

MEMU शेड के निर्माण और संचालन से स्थानीय स्तर पर कई तरह के रोजगार भी उत्पन्न होंगे। इसमें तकनीकी स्टाफ, मेंटेनेंस वर्कर, इंजीनियर, ठेका श्रमिक, सुरक्षा कर्मी और सहायक सेवाओं से जुड़े लोगों के लिए अवसर बनेंगे। इसके अलावा आसपास छोटे व्यवसायों- जैसे दुकानों, ट्रांसपोर्ट और सर्विस सेक्टर- को भी बढ़ावा मिलेगा।

कुल मिलाकर, मेड़ता रोड का यह MEMU शेड राजस्थान के लिए गेमचेंजर साबित होगा- जहां एक ओर यात्रियों को बेहतर सफर मिलेगा, वहीं दूसरी ओर स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार को नई गति मिलेगी।

राजस्थान के जोधपुर में होगा अब सबसे आधुनिक वंदे भारत स्लीपर का मेंटिनेंस

360 करोड़ की लागत से तैयार हो रहा देश का पहला समर्पित मेंटेनेंस डिपो

जोधपुर अब भारत के रेलवे आधुनिकीकरण का एक अहम केंद्र बनने जा रहा है। यहां देश का पहला वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का समर्पित मेंटेनेंस डिपो तेजी से तैयार हो रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 16 फरवरी 2024 को शिलान्यास के बाद इस परियोजना का पहला चरण तेजी से आगे बढ़ रहा है, जिसे जून 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य है। अब इस परियोजना को नई गति देते हुए रेल मंत्रालय ने फेज-2 के लिए 95 करोड़ का टेंडर जारी किया है। कुल मिलाकर इस प्रोजेक्ट की लागत लगभग 360 करोड़ आंकी गई है।

इस डिपो की सबसे बड़ी खासियत इसकी क्षमता है। यहां 600 मीटर लंबी मेंटेनेंस ट्रैक सुविधा होगी, जिसमें एक साथ 24 स्लीपर कोच (करीब 3 पूरी ट्रेन सेट) का रखरखाव किया जा सकेगा।

फेज-2, जिसे जून 2027 तक पूरा करने का लक्ष्य है, में अत्याधुनिक सुविधाएं जोड़ी जाएंगी। इसमें प्री-इंजीनियर्ड बिल्डिंग, मॉडर्न वर्कशॉप, सिम्युलेटर आधारित ट्रेनिंग सेंटर के साथ-साथ पिट लाइन्स, व्हील रैक सिस्टम, टेस्टिंग लैब, ड्रॉप पिट टेबल और बोगी ट्रांसफर सिस्टम शामिल होंगे। यहां थ्री-टियर इंस्पेक्शन सिस्टम, हाई-टेक मशीनरी और एडवांस्ड टेस्टिंग टूल्स के जरिए ट्रेनों की उच्च स्तर की देखभाल सुनिश्चित की जाएगी।

इस मेगा प्रोजेक्ट से जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। निर्माण कार्य से लेकर तकनीकी और संचालन से जुड़े हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। इसके अलावा स्थानीय व्यवसाय, जैसे ट्रांसपोर्ट, होटल और छोटे व्यापारियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

वंदे भारत स्लीपर सेवाओं के विस्तार के साथ, जोधपुर का यह डिपो देश में लंबी दूरी की तेज, सुरक्षित और आधुनिक रेल यात्रा के भविष्य को नई मजबूती देगा। साथ ही, यह परियोजना क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास को गति देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

रेल वैगन के स्क्रैप से तैयार इको हेरिटेज गार्डन बना ग्रीन इनोवेशन की मिसाल

जहाँ आमतौर पर फैक्ट्रियों से निकलने वाले स्क्रैप को बेकार मान लिया जाता है, वहीं झाँसी का वैगन मरम्मत कारखाना उसी स्क्रैप से एक नई मिसाल पेश कर रहा है। अब यह कारखाना केवल वैगनों की मरम्मत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और रचनात्मक सोच का एक जीवंत उदाहरण बन गया है।

करीब डेढ़ सदी पुराना यह कारखाना वर्ष 1882 में स्थापित हुआ था, जब देश में रेलवे नेटवर्क विस्तार की शुरुआत हो रही थी। इंडियन मिडलैंड रेलवे ने झाँसी को इस महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में चुना और 1895 में यहाँ स्टीम इंजन व यात्री डिब्बो की मरम्मत का कार्य शुरू हुआ।

आज 84 एकड़ में फैला यह कारखाना भारतीय रेलवे का सबसे बड़ा वैगन मरम्मत केंद्र बन चुका है, जहाँ हर महीने करीब 925 मालवाहक वैगनों की मरम्मत की जाती है। आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षित कर्मचारियों की मदद से यहाँ डिफेंस वैगनों समेत सभी प्रकार के वैगनों की ओवरहॉलिंग की जाती है, जिससे इसकी उत्पादन क्षमता काफी उच्च मानी जाती है।

हालांकि, अब इस कारखाने की पहचान केवल उसके काम तक सीमित नहीं रही। वर्ष 2023 में शुरू की गई एक नई पहल ने इसे एक अलग मुकाम दिया है। मरम्मत के दौरान निकलने वाले स्क्रैप का उपयोग कर करीब 5 एकड़ क्षेत्र में "इको हेरिटेज गार्डन" तैयार किया गया, जो आज लोगों के लिए आकर्षण का

प्रमुख केंद्र बन गया है। इस गार्डन में स्क्रैप से तैयार किए गए इंडिया गेट और ताजमहल जैसे मॉडल विशेष आकर्षण का केंद्र हैं, जो देखने वालों को चौंका देते हैं। इसके अलावा ट्री हाउस, झोपड़ियाँ, फिश पार्क, अंब्रेला गार्डन, वॉल आर्ट और 3D पोर्ट्रेट्स इसे एक अनोखा और जीवंत स्वरूप देते हैं। यह पहल स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अनुपयोगी समझी जाने वाली सामग्री को भी रचनात्मकता के माध्यम से उपयोगी और आकर्षक बनाया जा सकता है।

कारखाने में स्थापित रेल म्यूज़ियम भी अपनी अलग पहचान रखता है, जहाँ रेल मॉडल और कलाकृतियों के माध्यम से भारतीय रेल की समृद्ध विरासत को नए और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। झाँसी का यह वैगन मरम्मत कारखाना अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक प्रेरणादायक उदाहरण बनकर उभरा है, जो यह संदेश देता है कि नई सोच और नवाचार से स्क्रैप भी सृजन की मजबूत नींव बन सकता है।

घर में बनाएं नेचुरल कूलिंग क्रीम -शहनाज़ हुसैन

गर्मियों का मौसम अपने साथ तेज धूप, गर्म हवाएं, पसीना और धूल-मिट्टी जैसी कई परेशानियां लेकर आता है। इस मौसम में केवल शरीर ही नहीं, बल्कि त्वचा भी सबसे ज्यादा प्रभावित होती है। लगातार गर्मी और प्रदूषण के संपर्क में रहने से त्वचा अपनी प्राकृतिक नमी खोने लगती है। चेहरा बेजान, रूखा और थका हुआ दिखाई देने लगता है। कई लोगों को त्वचा पर जलन, लालपन, खुजली और चिपचिपाहट की समस्या भी होने लगती है। सूरज की तेज किरणें त्वचा की ऊपरी परत को नुकसान पहुंचाती हैं, जिससे त्वचा समय से पहले मुरझाई हुई नजर आने लगती है। ऐसे में लोग अपनी त्वचा को बचाने और चमक बनाए रखने के लिए महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स और सैलून ट्रीटमेंट का सहारा लेते हैं। हालांकि कई बार इन उत्पादों में मौजूद केमिकल त्वचा को फायदा पहुंचाने के बजाय नुकसान पहुंचा देते हैं। इसके अलावा हर किसी के लिए महंगे स्किन केयर प्रोडक्ट्स खरीदना आसान भी नहीं होता। दरअसल त्वचा को स्वस्थ और खूबसूरत बनाए रखने के लिए हमेशा महंगे उत्पादों की जरूरत नहीं होती। हमारे घर में मौजूद कई प्राकृतिक चीजें ऐसी हैं जो त्वचा को ठंडक पहुंचाने, नमी बनाए रखने और प्राकृतिक चमक लौटाने में बेहद असरदार साबित होती हैं। एलोवेरा, गुलाब जल, खीरा, नारियल तेल, शहद और बादाम तेल जैसी प्राकृतिक चीजें त्वचा के लिए किसी वरदान से कम नहीं मानी जातीं। इनसे बनी घरेलू कूलिंग क्रीम न केवल सस्ती होती हैं, बल्कि इनमें किसी तरह के हानिकारक केमिकल भी नहीं होते। यही कारण है कि ये हर प्रकार की त्वचा के लिए सुरक्षित और फायदेमंद मानी जाती हैं।

गर्मियों में त्वचा को सबसे ज्यादा जरूरत ठंडक और नमी की होती है। जब त्वचा लंबे समय तक धूप और गर्मी के संपर्क में रहती है तो उसकी प्राकृतिक नमी खत्म होने लगती है। इससे त्वचा खिंची-खिंची और रूखी महसूस होती है। ऐसे में एलोवेरा से बनी कूलिंग क्रीम बेहद फायदेमंद साबित होती है। एलोवेरा त्वचा को गहराई से हाइड्रेट करता है और उसे ठंडक पहुंचाता है। यदि इसमें गुलाब जल और खीरे का रस मिला दिया जाए तो इसका असर और भी बढ़ जाता है। गुलाब जल त्वचा को ताजगी देता है जबकि खीरे का रस त्वचा को ठंडा और शांत रखने में मदद करता है।

घर पर एक आसान और असरदार कूलिंग क्रीम तैयार करने के लिए एक कांच की कटोरी में एक चम्मच एलोवेरा जेल, एक चम्मच गुलाब जल और एक चम्मच खीरे का रस मिलाकर अच्छी तरह फेंट लें। जब इसका टेक्सचर हल्की और मुलायम क्रीम जैसा हो जाए तो इसे कुछ समय के लिए फ्रिज में रख दें। यह क्रीम चेहरे और त्वचा के खुले हिस्सों पर लगाने से तुरंत ठंडक का अहसास देती है। खास बात यह है कि यह त्वचा को चिपचिपा नहीं बनाती बल्कि उसे फ्रेश और मुलायम बनाए रखती है। इसे लगाने से पहले चेहरे को साफ पानी से धो लेना जरूरी होता है ताकि धूल और प्रदूषण हट जाएं और क्रीम त्वचा में अच्छी तरह समा सके। गर्मियों में रात के समय त्वचा की देखभाल करना भी बेहद जरूरी होता है। पूरे दिन धूप और प्रदूषण झेलने के बाद त्वचा को पोषण और मरम्मत की जरूरत होती है। इसके लिए एलोवेरा जेल, कैस्टर ऑयल और विटामिन ई से बनी घरेलू क्रीम काफी फायदेमंद मानी जाती है। एलोवेरा त्वचा को ठंडक देता है, कैस्टर ऑयल त्वचा को गहराई से पोषण देता है और विटामिन ई त्वचा को मुलायम और चमकदार बनाए रखने में मदद करता है। इन तीनों चीजों को मिलाकर तैयार की गई क्रीम को रात में सोने से पहले हल्के हाथों से चेहरे पर लगाना चाहिए। धीरे-धीरे मसाज करने से यह क्रीम त्वचा में अच्छी तरह समा जाती है और रातभर त्वचा को रिपेयर करने का काम करती है। नियमित उपयोग से त्वचा में निखार और मुलायमपन साफ नजर आने लगता है।

खीरा गर्मियों में त्वचा के लिए बेहद लाभकारी माना जाता है। इसमें पानी की मात्रा अधिक होती है जो त्वचा को ठंडा और हाइड्रेटेड बनाए रखती है। यदि एलोवेरा जेल में खीरे का रस और बादाम तेल मिलाकर उसमें पुदीने के तेल की कुछ बूंदें डाल दी जाएं, तो यह एक बेहतरीन कूलिंग क्रीम बन जाती है। पुदीने का तेल त्वचा को तुरंत ठंडक पहुंचाता है और धूप के कारण होने वाली जलन को कम करता है। नहाने के बाद या धूप से लौटने के बाद इस क्रीम को लगाने से त्वचा को आराम मिलता है और चेहरे की थकान दूर हो जाती है।

गर्मियों में कई लोगों को त्वचा पर जलन और लालपन की शिकायत रहती है। खासतौर पर धूप में ज्यादा देर रहने के बाद त्वचा संवेदनशील हो जाती है। ऐसे में नारियल तेल, शिया बटर, एलोवेरा जेल, शहद और टी ट्री ऑयल से बनी क्रीम बेहद राहत देती है। नारियल तेल त्वचा को गहराई से मॉइस्चराइज करता है, शिया बटर त्वचा की नमी बनाए रखता है और शहद त्वचा को मुलायम बनाता है। वहीं टी ट्री ऑयल में एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं जो त्वचा को संक्रमण से बचाने में मदद करते हैं। इस क्रीम को फ्रिज में रखकर इस्तेमाल करने से इसका कूलिंग इफेक्ट और भी बढ़ जाता है। जब भी त्वचा पर जलन या रूखापन महसूस हो, इसे लगाने से तुरंत आराम मिलता है।

घरेलू नेचुरल क्रीम की सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि इनमें किसी तरह के हानिकारक केमिकल या प्रिजर्वेटिव नहीं होते। बाजार में मिलने वाले कई उत्पादों में मौजूद कृत्रिम खुशबू और केमिकल लंबे समय तक उपयोग करने पर त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं। जबकि प्राकृतिक चीजों से बनी क्रीम त्वचा को बिना नुकसान पहुंचाए पोषण देती हैं। यही वजह है कि ये संवेदनशील त्वचा वालों के लिए भी सुरक्षित मानी जाती हैं।

एलोवेरा, गुलाब जल और खीरे जैसी प्राकृतिक चीजें त्वचा के पीएच लेवल को संतुलित रखने में मदद करती हैं। गर्मियों में त्वचा पर अधिक तेल और पसीना जमा होने लगता है, जिससे चिपचिपाहट और मुंहासों की समस्या बढ़ जाती है। नेचुरल क्रीम त्वचा के अतिरिक्त तेल को नियंत्रित करती हैं और त्वचा को फ्रेश बनाए रखती हैं। इसके नियमित उपयोग से चेहरा साफ, मुलायम और दमकता हुआ नजर आने लगता है।

पश्चिम रेल्वे

सुधार कार्य

Sr.DEE/P/BCT टेंडर आमंत्रित करते हैं। सूचना संख्या और दिनांक: EL-81-946-WA-17 दिनांक 15-05-2026। कार्य (मुंबई मंडल) और स्थान: RCCB, कॉन्टैक्टर के साथ MMR, न्यूट्रल अर्थिंग और न्यूट्रल सेग्रीगेशन उपलब्ध कराकर सुरक्षा में सुधार। कार्य की अनुमानित लागत: ₹7,38,60,317.00. बिड सिक्योरिटी (EMD) की लागत: ₹14,77,200.00। जमा करने की तिथि और समय: दि.10-06-2026 के 15.00 बजे तक. खोलने की तिथि और समय: दि. 10-06-2026 को 15.30 बजे। अधिक विवरण के लिए कृपया वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं।

0121

पश्चिम रेलवे – रतलाम

ई –निविदा सूचना

क्र.सं.– 1. ई–टेंडरिंग संख्या – : ईएल–2025–26–26आर1. कार्य का नाम : रतलाम मंडल : रतलाम और इंदौर–रतलाम स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 4 और प्लेटफार्म संख्या 7 पर 6 एस्केलेटर और इंदौर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 5/6 के परिचालित क्षेत्र में 1 एस्केलेटर की स्थापना। (विद्युत + सिविल)। अनुमानित लागत : ₹74059417.39/– बयाना राशि : ₹1481200/– कार्य की समापन अवधि : 12 माह, वेब–साईट पर अपलोड करने की तिथि : 14/05/2026. निविदा खुलने की तिथि : 09/06/2026.

क्र.सं.– 2. ई–टेंडरिंग संख्या – : ईएल–2025–26–36आर. कार्य का नाम : रतलाम मंडल–सनावद– सनावद गुड्स शेड में अस्थायी सुविधाओं के विकास से संबंधित विद्युत कार्य। अनुमानित लागत : ₹2196160.86/– बयाना राशि : ₹43900/– कार्य की समापन अवधि : 12 माह, वेब–साईट पर अपलोड करने की तिथि : 14/05/2026. निविदा खुलने की तिथि : 09/06/2026.

क्र.सं.– 3. ई–टेंडरिंग संख्या – :ईएल–2026–27–01आर. कार्य का नाम : रतलाम मंडल–रतलाम – कुरेल बांध, शिमला कॉलोनी तालाब और अन्य जल स्रोतों के संवर्धन और उन्नयन से संबंधित विद्युत कार्य। अनुमानित लागत : ₹5752015.50/– बयाना राशि : ₹115100/– कार्य की समापन अवधि : 06 माह, वेब–साईट पर अपलोड करने की तिथि : 14/05/2026. निविदा खुलने की तिथि : 09/06/2026.

विस्तृत निविदा सूचना एवं अन्य शर्तें वेब–साईट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।

SNP-060

हमें फॉलो करें : x.com/WesternRly

वर्ल्ड में पहली बार Broad Gauge ट्रैक पर दौड़ेगी Semi High Speed Train, अहमदाबाद-धोलेरा कॉरिडोर को मिली मंजूरी

▸▸ गुजरात को मिला भारत का पहला सेमी हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर, अहमदाबाद–धोलेरा के बीच बनेगा 134 किमी लंबा ब्रॉड गेज सेमी हाई-स्पीड कॉरिडोर

▸▸ 20,667 करोड़ की लागत से विकसित होगा देश का पहला स्वदेशी तकनीक आधारित सेमी हाई-स्पीड रेल प्रोजेक्ट — नमो भारत ट्रेनों का होगा संचालन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) ने गुजरात को देश का पहला ब्रॉड गेज सेमी हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर प्रदान करते हुए अहमदाबाद (सरखेज)–धोलेरा सेमी हाई-स्पीड डबल लाइन रेलवे परियोजना को ऐतिहासिक मंजूरी प्रदान की है। लगभग 20,667 करोड़ की लागत वाली यह परियोजना भारतीय रेलवे की पहली स्वदेशी तकनीक आधारित सेमी हाई-स्पीड रेल परियोजना होगी, जिस पर भविष्य में नमो भारत ट्रेनों का संचालन किया जाएगा।

करीब 134 किलोमीटर लंबी यह नई दोहरी रेल लाइन अहमदाबाद, धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन (SIR), आगामी धोलेरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा तथा लोथल स्थित राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (National Maritime Heritage Complex) को अत्याधुनिक रेल कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। परियोजना की डिज़ाइन गति 220 किमी प्रति घंटा तथा परिचालन गति 200 किमी प्रति घंटा निर्धारित की गई है। कॉरिडोर पर कुल 13 स्टेशन विकसित किए जाएंगे।

परियोजना के अंतर्गत 3 मेगा पुल, 74 किलोमीटर वायाडक्ट, 39 रोड अंडर ब्रिज तथा 2 रेल ओवर ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। कुल ट्रैक लंबाई लगभग 293 किलोमीटर होगी। परियोजना को अगले 4 वर्षों में पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा

"अहमदाबाद–धोलेरा सेमी हाई-स्पीड रेल परियोजना भारत के रेलवे इतिहास में एक नई शुरुआत है। यह केवल एक रेल लाइन नहीं, बल्कि 'न्यू इंडिया' की आधुनिक, तेज और आत्मनिर्भर परिवहन व्यवस्था का प्रतीक है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय रेलवे आत्मनिर्भर भारत के विज़न को नई गति दे रहा है। स्वदेशी तकनीक आधारित यह परियोजना भविष्य में देशभर में सेमी हाई-स्पीड रेल नेटवर्क विस्तार का आधार बनेगी।"

मंडल रेल प्रबंधक (DRM), भावनगर श्री दिनेश वर्मा ने कहा

"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी और माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी के मार्गदर्शन में भारतीय रेलवे को इस ऐतिहासिक परियोजना के क्रियान्वयन का गौरव प्राप्त हुआ है। 134 किलोमीटर लंबा यह कॉरिडोर एक्सप्रेसवे के समानांतर नए संरेखण पर विकसित किया जाएगा। यह परियोजना अहमदाबाद एवं धोलेरा क्षेत्र को विश्वस्तरीय रेल कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। इससे यात्रियों को तेज, सुरक्षित एवं आधुनिक यात्रा सुविधा मिलेगी तथा क्षेत्र में उद्योग, लॉजिस्टिक्स और रोजगार को भी नई गति मिलेगी।"

उन्होंने आगे कहा कि विश्व का पहला ब्रॉडगेज सेमी हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर अब गुजरात में बनने जा रहा है। पहली बार दुनिया में कोई सेमी हाई-स्पीड ट्रेन 220 किमी/घंटा की रफ्तार से ब्रॉडगेज ट्रैक पर दौड़ेगी। यह पूरी परियोजना और ट्रेन पूरी तरह मेक इन इंडिया तकनीक पर आधारित होगी। ट्रेन में अत्याधुनिक कवच 5.0 सुरक्षा प्रणाली लगाई जाएगी, जिससे सुरक्षा और ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन का नया मानक स्थापित होगा। अब तक दुनिया में सेमी हाई-स्पीड ट्रेनें मुख्यतः स्टैंडर्ड गेज पर चलती रही हैं, लेकिन भारत पहली बार ब्रॉडगेज नेटवर्क पर 220 kmph स्पीड का सफल मॉडल विकसित करने जा रहा है। यह सिर्फ एक रेल परियोजना नहीं, बल्कि भारतीय इंजीनियरिंग, आत्मनिर्भरता और रेलवे आधुनिकीकरण का ऐतिहासिक अध्याय है। इस परियोजना के पूर्ण होने के बाद अहमदाबाद और धोलेरा के बीच यात्रा समय घटकर लगभग 1 घंटे से भी कम रह जाएगा तथा धोलेरा को सीधे अहमदाबाद–मुंबई हाई स्पीड रेल कॉरिडोर से जोड़ने में भी सहायता मिलेगी।

परियोजना के प्रमुख लाभ

- लगभग 5 लाख से अधिक आबादी को प्रत्यक्ष लाभ
- प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख टन अतिरिक्त मालभाड़ा परिवहन क्षमता
- लॉजिस्टिक लागत में प्रतिवर्ष लगभग 54 करोड़ की बचत
- निर्माण चरण में लगभग 91 लाख मानव-दिवस रोजगार सृजन
- लगभग 0.48 करोड़ लीटर ईंधन की वार्षिक बचत
- लगभग 2 करोड़ किलोग्राम CO उत्सर्जन में कमी — जो लगभग 10 लाख पेड़ों के रोपण के बराबर पर्यावरणीय लाभ के समान है
- साबरमती, गांधीग्राम एवं वस्त्रापुर स्टेशनों पर मेट्रो नेटवर्क से एकीकरण
- साबरमती स्टेशन पर बुलेट ट्रेन कनेक्टिविटी
- मोरैया (साणंद) में डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर तथा भीमनाथ लॉजिस्टिक हब से संपर्क

यह परियोजना प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के अनुरूप विकसित की जा रही है, जिसका उद्देश्य मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी को मजबूत करना तथा भारत की लॉजिस्टिक दक्षता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है। यह कॉरिडोर गुजरात को आधुनिक, हरित एवं उच्च गति परिवहन अवसंरचना के नए युग में प्रवेश कराने वाली ऐतिहासिक पहल सिद्ध होगा।

लोकोमोटिव शेड साबरमती में फायर मॉक ड्रिल का आयोजन,अग्नि सुरक्षा एवं आपातकालीन बचाव उपायों की दी गई जानकारी

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के लोकोमोटिव शेड साबरमती में दिनांक 19.05.2026 को अधिकारियों, सुपरवाइजर्स एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में फायर मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स द्वारा कर्मचारियों को अग्नि सुरक्षा से संबंधित आवश्यक सावधानियों, आग लगने की स्थिति में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों तथा अग्निशमन यंत्रों के सही एवं प्रभावी उपयोग के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही मॉक ड्रिल के माध्यम से आग लगने की स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया एवं बचाव कार्यों का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ मंडल इंजीनियर साबरमती, श्री एस. पी. गुप्ता द्वारा कर्मचारियों को कार्यस्थल पर सुरक्षा एवं संरक्षा नियमों का पालन करने, आग से बचाव हेतु सदैव सतर्क रहने तथा किसी भी आपात स्थिति में त्वरित एवं सुरक्षित कार्रवाई सुनिश्चित करने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम कर्मचारियों की सुरक्षा जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ आपदा प्रबंधन क्षमता को भी सुदृढ़ करते हैं। कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों ने फायर सेफ्टी संबंधी जानकारियों को गंभीरता से ग्रहण किया तथा भविष्य में सुरक्षा मानकों के पालन हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एक इन्फ्लुएंसर ने खाटू श्याम मंदिर के बाहर 3 घंटे में भीख मांगकर 4000 रुपये से अधिक कमाए, वीडियो वायरल हो गया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारी संस्कृति में दान, धर्म, उपवास और व्रत को महत्व दिया जाता है। इसलिए, हम मंदिरों, मस्जिदों, दरगाहों या अन्य धार्मिक स्थलों पर बैठे भिखारियों को कुछ देकर पुण्य का दीवार खड़ी करते हैं। फिर राजस्थान के प्रसिद्ध खाटू श्याम मंदिर के बाहर घटी एक अनोखी घटना सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गई है। एक जाने-माने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर

ने फटे-पुराने कपड़े पहनकर, भिखारी का रूप धारण करके और हाथ में कटोरा लेकर मंदिर के बाहर तीन घंटे तक बैठकर भीख मांगी। इन तीन घंटों में उन्हें मिली भीख की रकम जानकर आप दंग रह जाएंगे।

इस इन्फ्लुएंसर ने महज तीन घंटे में 4,000 रुपये से अधिक का दान इकट्ठा कर लिया। यह रकम एक औसत मध्यमवर्गीय व्यक्ति की एक दिन की कमाई से कहीं अधिक है। हालांकि, इन्फ्लुएंसर ने इस वीडियो को सोशल मीडिया पर साझा करते हुए कहा कि लोग पूजा स्थलों पर इतनी उदारता से दान करते हैं कि भीख मांगना भी एक बड़ा व्यवसाय बन गया है।

यहां यह उल्लेख करना उचित होगा कि कुछ दिनों पहले एक करोड़पति भिखारी की खबर भी सुर्खियों में थी। उसके घर से 500-500 के नोटों के बंडल बरामद हुए थे। इसे ही तो बिना पूंजी का कारोबार कहते हैं।

मुख्य सचिव एम.के. दास स्व - गणना (सेल्फ एन्यूमरेशन) अभियान में सहभागी हुए

▸▸ गुजरात के लगभग 60 हजार से अधिक नागरिक स्व - गणना अभियान में जुड़े : मुख्य सचिव एम.के. दास

▸▸ मुख्य सचिव ने सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को अभियान में जुड़ने की अपील की

गांधीनगर : गुजरात राज्य के मुख्य सचिव श्री एम.के. दास भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए विशेष 'स्व-गणना' (सेल्फ एन्यूमरेशन) अभियान में सहभागी हुए। मुख्य सचिव ने मंगलवार को ऑनलाइन पोर्टल पर परिवार की जानकारी स्वयं भरकर इस डिजिटल सेवा का लाभ लिया। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने कहा कि यह पद्धति अत्यंत सरल और पारदर्शी है और अब तक लगभग 60 हजार से अधिक नागरिकों ने इस सेवा का लाभ लिया है। उन्होंने इस अवसर पर सभी सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। उन्होंने यह भी विश्वास व्यक्त किया कि इस नई डिजिटल सुविधा के कारण आगामी समय में जनगणना की पूरी प्रक्रिया बहुत तेज और सटीक बनेगी। मुख्य सचिव ने टेक्नोलॉजी के श्रेष्ठ उपयोग के लिए भारत सरकार का आभार भी व्यक्त किया।

VGRC दक्षिण गुजरात: क्षेत्रीय विकास के लिए एक वैश्विक मंच

STRAP: वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (दक्षिण गुजरात) ने इस क्षेत्र को राज्य के आर्थिक विकास को गति देने वाले एक प्रमुख 'इंजन' के रूप में स्थापित किया है

गांधीनगर : 1 और 2 मई 2026 को सूरत की ऑरो (AURO) यूनिवर्सिटी में आयोजित दक्षिण गुजरात क्षेत्र के लिए 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' (VGRC) एक ऐतिहासिक आयोजन रहा, जिसने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के साथ सफलतापूर्वक जोड़ा। आर्थिक गतिविधियों को गति देने वाले एक रणनीतिक मंच के रूप में, इस दो दिवसीय सम्मेलन के समापन पर 2,792 समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए गए और कुल 3.53 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। वीजीआरसी के केंद्र में मुख्य रूप से भरूच, डांग, नवसारी, सूरत, तापी और वलसाड जिले रहे। इस आयोजन में दर्ज की गई व्यापक भागीदारी दक्षिण गुजरात क्षेत्र में निवेशकों के अपार विश्वास और रुचि का प्रत्यक्ष प्रमाण है। 20,000 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के पंजीकरण तथा 27 देशों के 150 से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों की सहभागिता ने गुजरात के बढ़ते वैश्विक प्रभाव को पूरी दृढ़ता के साथ प्रदर्शित किया।

इस संस्करण के लिए जापान, सिंगापुर, रवांडा और यूक्रेन ने 'पार्टनर कंट्रीज' के रूप में कार्य किया। उन्हें प्रतिष्ठित 'पार्टनर ऑर्गनाइजेशन्स' - जापान एक्सटर्नल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (JETRO), रूसी संघ के व्यापार प्रतिनिधिमंडल, यूएस-इंडिया स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप फोरम (USISPF), भारत में अमेरिकन चैंबर ऑफ कॉमर्स (AMCHAM) और कोरिया ट्रेड-इन्वेस्टमेंट प्रमोशन एजेंसी (KOTRA) का समर्थन प्राप्त हुआ।

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल ने 1 मई 2026 को इस रीजनल कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन किया था। गुजरात के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री हर्षभाई सांघवी ने उद्घाटन सत्र के दौरान सभा को संबोधित किया था। उद्घाटन के दिन उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में भारत सरकार के माननीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी और भारत सरकार के माननीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल शामिल थे।

इस सत्र में भाग लेने वाले विदेशी प्रतिनिधियों में भारत में जापान के राजदूत महामहिम श्री केनिची ओनो; भारत में सिंगापुर के उच्चायुक्त महामहिम श्री साइमन वोंग; भारत में यूक्रेन के राजदूत महामहिम डॉ. ओलेक्सांद्र पोलिशचुक; भारत में रवांडा की उच्चायुक्त महामहिम सुश्री जैकलीन मुकांगिरा; और भारत में सेशेल्स की उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती लालतियाना अकोचे शामिल थीं।

पहले दिन उपस्थित उद्योग जगत के दिग्गजों और अन्य गणमान्य लोगों में एसोचैम (ASSOCHAM) के अध्यक्ष श्री निर्मल मिंडा; निप्पॉन स्टील कॉर्पोरेशन के प्रबंध कार्यकारी अधिकारी श्री नोबुओ ओकोची; एएम/एनएस (AM/NS) इंडिया के सीईओ श्री दिलीप ओमन; हरि कृष्णा एक्सपोर्ट्स के चेयरमैन श्री सवजीभाई ढोलकिया (पद्मश्री); डोनेट लाइफ के संस्थापक और अध्यक्ष श्री नीलेश मांडलेवाला (पद्मश्री); किरण हॉस्पिटल्स के चेयरमैन श्री माथुरभाई सवानी (पद्मश्री); तथा शिक्षक, लेखक व अभिनेता श्री यज़्दी करंजिया (पद्मश्री) शामिल थे।

दूसरे दिन, 2 मई को माननीय केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री जे.पी. नड्डा ने कार्यक्रम में भाग लिया और समापन सत्र को संबोधित किया।

सम्मेलन के साथ-साथ, 1 से 5 मई तक 12,000 वर्ग मीटर में फैले 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्जीबिशन' (VGRE) का आयोजन किया गया था। इसमें इंजीनियरिंग, कृषि, रत्न एवं आभूषण, कपड़ा (टेक्सटाइल्स), नवीकरणीय ऊर्जा, एमएसएमई (MSME) और स्टार्टअप जैसे प्रमुख क्षेत्रों के 300 से अधिक प्रदर्शकों ने भाग लिया, जिन्होंने भारत और विदेशों से आए प्रतिभागियों के सामने अपने उत्पादों, तकनीकों और समाधानों का प्रदर्शन किया। 1 से 5 मई 2026 तक इस प्रदर्शनी में 70,000 से अधिक दर्शक पहुंचे।

इस आयोजन का एक प्रमुख आकर्षण 'रिवर्स बायर-सेलर मीट' (RBSM) था। आरबीएसएम के दौरान 1,210 से अधिक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए और निर्यात के लिए 580 करोड़ रुपये से अधिक की व्यावसायिक पूछताछ (Business Inquiries) उत्पन्न हुई। इस मंच ने संवाद को ठोस अवसरों में बदलते हुए 4,200 से अधिक व्यवस्थित बिजनेस-टू-बिजनेस (B2B) बैठकों को सुविधाजनक बनाया, जिसमें 59 अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों को गुजरात स्थित 1,200 से अधिक विक्रेताओं के साथ सीधे जोड़ा गया।

वीजीआरई के हिस्से के रूप में आयोजित 'उद्यमी मेले' के माध्यम से कुल 300 करोड़ रुपये से अधिक के सैद्धांतिक मंजूरी पत्र जारी किए गए। बैंकों ने एमएसएमई उद्यमियों को 1,650 करोड़ रुपये से अधिक के स्वीकृति पत्र भी जारी किए। इसके अतिरिक्त, प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करने और स्थानीय शिल्प कौशल को मान्यता देने के लिए क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) द्वारा एमएसएमई इकाइयों को 200 से अधिक जेड (ZED) प्रमाणपत्र और 100 से अधिक कारीगर कार्ड जारी किए गए। 2 मई 2026 को समापन सत्र के अंतर्गत 10 पुरस्कार वितरित किए गए। इनमें से आठ पुरस्कार एमएसएमई को और दो कारीगरों को दिए गए।

इस प्रदर्शनी में, जिसने अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के सामने दक्षिण गुजरात की अनूठी कृषि और कलात्मक विरासत को प्रदर्शित किया, कुल बिक्री लगभग 38 लाख रुपये तक पहुंच गई। इसमें से गुजरात महिला आर्थिक विकास निगम द्वारा प्रायोजित महिला उद्यमियों ने लगभग 14 लाख रुपये का कारोबार किया। मैंगो फेस्टिवल जो वीजीआरई में पहली बार आयोजित हुआ, में लगभग 8 लाख रुपये की बिक्री हुई, जबकि इंडेक्स-सी (iNDEXTc) द्वारा प्रायोजित कारीगरों ने 5.55 लाख रुपये से अधिक का सामान बेचा। गुजरात लाइवलीहुड प्रमोशन कंपनी द्वारा प्रमोटेड 'सखी मंडल' ने 5 लाख रुपये से कुछ अधिक के उत्पाद बेचे, जबकि 'ट्राइबल हाट' ने 5.31 लाख रुपये की बिक्री दर्ज की।

वैश्विक आगंतुकों ने लैब-ग्रोन डायमंड्स, फूड प्रोसेसिंग और टेक्सटाइल्स में विशेषज्ञता रखने वाली औद्योगिक इकाइयों के भ्रमण के माध्यम से इस क्षेत्र की क्षमताओं को करीब से जाना। क्षेत्रीय ताकत को वैश्विक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर, सूरत में आयोजित इस 'रीजनल कॉन्फ्रेंस' ने राज्य के भविष्य के आर्थिक विकास के इंजनों में से एक के रूप में दक्षिण गुजरात की स्थिति को और मजबूत किया है।

सूरत में भाजपा युवा कार्यकर्ता जय दलाल की हत्या से सनसनी मच गई, पुलिस ने जांच तेज कर दी है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। अपराधियों की बारात जरूर निकलेगी, उन्हें लंगड़े पैरों पर चलना पड़ेगा। मानो ये अपराधी राज्य के मुखर गृह मंत्री को चुनौती दे रहे हों, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से ऐसी अभद्र टिप्पणी की थी, और आधी रात को उधना रोड नंबर 6 पर भाजपा की एक महिला नेता के बेटे को सरेआम कैद कर लिया, तो उन्होंने गृह मंत्री और राज्य के उपमुख्यमंत्री समेत पुलिस व्यवस्था को चुनौती दी है कि अगर हम भाजपा नेता के बेटे के साथ ऐसा कर सकते हैं, तो आम आदमी को क्या चिंता है? जब आज लोगों में ऐसा अंतर्निहित भय व्याप्त है, तो जनता की सुरक्षा को लेकर सवाल उठना स्वाभाविक है। सूरत के उधना रोड नंबर 6 पर रात करीब 12:30 बजे भाजपा के युवा कार्यकर्ता जय दलाल की सरेआम हत्या ने आम नागरिकों में भय का माहौल पैदा कर दिया है। मृतक जय दलाल की माता जयश्रीबेन दलाल वार्ड नंबर 27 में भाजपा की सक्रिय महिला कार्यकर्ता हैं। उन्हें भाजपा की महिला विधायक संगीताबेन पाटिल का करीबी माना जाता है और वे संगठन में विधायक के साथ सक्रिय रूप से काम करती हैं।

इस संबंध में सूरत के सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) चिराग वडोदरिया ने कहा, "रविवार रात जब भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष जय दलाल और उनके दोस्त एक कबाड़ की दुकान के पास खड़े थे, तभी किशन उर्फ चकली परमार, पंकज पाटिल और मिलिंद कोली दोपहिया वाहन पर आए। इन तीनों ने जय को डंडे से पीटा। जय को अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। शुरुआती तौर पर यह माना जा रहा है कि जय और आरोपियों के बीच तीन महीने पहले झगड़ा हुआ था। यह भी माना जा रहा है कि इसी झगड़े के चलते यह हत्या की गई है।" इसके अलावा, विश्वसनीय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, अपराधियों को शक था कि मृतक जय ने उनसे (अपराधियों से) जुए का खेल करवाया था। यह भी एक कारण था। इसके अलावा, लगभग तीन महीने पहले मोपेड के पहिए को लेकर हुई झड़प भी शक का कारण है। साथ ही, लगभग पांच महीने पहले उधना रोड नंबर 6 पर कबाड़ की दुकान के पास शराब का धंधा शुरू हुआ था, जहां इस युवा भाजपा नेता की हत्या हुई थी। यह धंधा भी अचानक बंद हो गया था। इस दौरान यह चर्चा भी जोर पकड़ रही है कि मृतक जय की इसमें दिलचस्पी थी। हालांकि, यह सिर्फ एक अफवाह है। फिलहाल, उधना पुलिस इस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है।

सोना वायदा में 351 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 141 रुपये की वृद्धिः चांदी वायदा में 2739 रुपये की नरमी

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 160807.01 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 26988.98 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 133817.91 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मई वायदा 38791 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2133.13 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 18710.11 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सत्र के आरंभ में 159899 रुपये के भाव पर खूलकर, 160200 रुपये के दिन के उच्च और 159161 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 159401 रुपये के पिछले बंद के सामने 351 रुपये या 0.22 फीसदी की मजबूती के साथ 159752 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी मई वायदा 40 रुपये या 0.03 फीसदी बढ़कर 127907 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल मई वायदा 11 रुपये या 0.07 फीसदी बढ़कर 16026 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी जून वायदा 159008 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 159489 रुपये और नीचे में 158601 रुपये पर पहुंचकर, 326 रुपये या 0.21 फीसदी बढ़कर 159229 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन मई वायदा प्रति 10 ग्राम 159195 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 160299 रुपये और नीचे में 159015 रुपये पर पहुंचकर, 159153 रुपये के पिछले बंद के सामने 248 रुपये या 0.16 फीसदी बढ़कर 159401 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी जुलाई वायदा सत्र के आरंभ में 276271 रुपये के भाव पर खूलकर, 276666 रुपये के दिन के उच्च और 272910 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 276651 रुपये के पिछले बंद के सामने 2739 रुपये या 0.99 फीसदी गिरकर 273912 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी जून वायदा 2784 रुपये या 1 फीसदी गिरकर 276832 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो जून वायदा

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 26988.98 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 133817.91 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 18710.11 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38791 पॉइंट के स्तर पर

2767 रुपये या 0.99 फीसदी औंधकर 276850 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

मेटल वर्ग में 3214.88 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मई वायदा 4.25 रुपये या 0.32 फीसदी घटकर 1344 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मई वायदा 2.35 रुपये या 0.64 फीसदी की बढ़त के साथ 367.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम मई वायदा 4.9 रुपये या 1.29 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 386.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मई वायदा 35 पैसे या 0.17 फीसदी बढ़कर 202.8 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5133.93 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जून वायदा सत्र के आरंभ में 9919 रुपये के भाव पर खूलकर, 10080 रुपये के दिन के उच्च और 9901 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 141 रुपये या 1.42 फीसदी की बढ़त के साथ 10065 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जून वायदा 144 रुपये या 1.45 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 10066 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस मई वायदा 291.9 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 297.2 रुपये और नीचे में 289.8 रुपये पर पहुंचकर, 292.5 रुपये के पिछले बंद के सामने 3.8 रुपये या 1.3 फीसदी बढ़कर 296.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मई वायदा 3.8 रुपये या 1.3 फीसदी बढ़कर 296.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मई वायदा 1000 रुपये पर खूलकर, 60 पैसे या 0.06 फीसदी टूटकर 990 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 10334.53 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8375.58 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2308.89 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 518.64 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 7.18 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 366.31 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 2883.72 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2243.28 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 2.79 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 10256 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 62105 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 19757 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 281361 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 43102 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 9727 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 23587 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 74805 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18779 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 34035 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मई वायदा सत्र के आरंभ में 38791 पॉइंट पर खूलकर, 38791 के उच्च और 38791 के नीचले स्तर को छूकर, 48 पॉइंट बढ़कर 38791 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जून 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 63.3 रुपये की बढ़त के साथ 850.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 295 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 60 पैसे के सुधार के साथ 7 रुपये हुआ।

सोना मई 165000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 32 रुपये की गिरावट के साथ 568.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 542 रुपये की गिरावट के साथ 1248 रुपये हुआ। तांबा मई 1350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 4.37 रुपये की गिरावट के साथ 11.28 रुपये हुआ। जस्ता मई 410 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 6 पैसे की नरमी के साथ 0.25 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जून 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 58.7 रुपये की गिरावट के साथ 802 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.8 रुपये की गिरावट के साथ 4.5 रुपये हुआ।

सोना मई 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 36 रुपये की गिरावट के साथ 263.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 63 रुपये की गिरावट के साथ 1400.5 रुपये हुआ। तांबा मई 1340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 45 पैसे की नरमी के साथ 12.82 रुपये हुआ। जस्ता मई 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2 पैसे के सुधार के साथ 0.53 रुपये हुआ।